www.ghoonghatkibagawat.com ghoonghatkibagawat37@gmail.com ghoonghatkibagawat.com

UP/HIN/1999/1282

घूँघट की बगावत

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित हिन्दी (साप्ताहिक समाचार पत्र)

वर्ष : 23 | अंक : 04 | गोरखपुर | 23 जुलाई 2023 | पृष्ठ : 8 | मूल्यः 2/–

सीमा और सचिन के संबंधों की पृष्ठभूमि और हकीकत तक पहुंचना जरूरी

पाकिस्तान से अवैध तरीके से भारत में आई सीमा हैदर और उसके कथित पति सचिन मीणा को हिरासत में ले लिया गया है। यह गिरफ्तारी नहीं है। यह कार्रवाई उत्तर प्रदेश के आतंकवाद निरोधक दस्ते (एटीएस) ने की है, क्योंकि उसके कुछ प्राथमिक संदेह हैं, लिहाजा वह गहन सवाल–जवाब करना चाहता है। एटीएस के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी सीमा को पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई का एजेंट या जासूस मानकर चल रहे हैं। पाकिस्तान की 27 वर्षीय सीमा अपने चार नाबालिग और छोटे–छोटे बच्चों समेत पहले शारजाह गयी, वहां से नेपाल कैसे आयी और अंततः भारतमें कैसे घुसी ? सरहद पर बीएसएफ और स्थानीय पुलिस ने उसे क्यों नहीं पकड़ा? उनसे भी स्पष्टीकरण मांगा जा रहा है। इस सीमा के पास चार मोबाइल फोन, तीन फर्जी पहचान पत्र, चार जन्म प्रमाण–पत्र, चार पासपोर्ट बच्चों के, दो पासपोर्ट खुद सीमा के और पांच वेक्सीनेशन सर्टिफिकेट आदि दस्तावेज कहांसे आये, उसने क्यों बनवाये अथवा किसने उसकी मदद की ?

यदि वह सामान्य औरत है और इश्क में डूबी है तो उसे इतने दस्तावेजों की जरूरत ही क्या थी? इन सवालों के अलावा, एटीएस, पुलिस, गुप्तचर ब्यूरो सरीखी जांच एजेंसियों के सामने यह अहम सवाल भी है कि सीमा को उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा आने के बाद पाकिस्तान में 30 से अधिक हिन्दू औरतें क्यों लापता कर दी गयी हैं और वे कहां हैं? पाकिस्तान की हुकूमत स्पष्ट करे। कराची के हिन्दू मन्दिर पर रॉकेट लांचर से हमला क्यों किया गया है? वैसे पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों पर हमले होते रहे हैं। उन्हें धर्मान्तरण के लिए भी विवश किया जाता रहा है, लेकिन चिन्ता की बात यह है कि पाकिस्तान में हिन्दू औरतों को मारने की धमकियां दी जा रही हैं। पाकिस्तानी महिला सीमा हैदर मामले की जांच कर रही केन्द्रीय जांच एजेंसियों को अहम जानकारी मिली है। आईबी के खुलासे में उस तीसरे शख्स का जिक्र है, जिसकी मददसे पूरी तैयारी के साथ सीमा को भारतीय बॉर्डर में दाखिला करवाया गया था। आईबी के मुताबिक सीमा ने बकायदा पूरी तैयारी के साथ अपना ड्रेसअप इस तरीके से किया था कि वह ग्रामीण भारतीय महिला लगे। सीमा को इस तरीके से तैयार करने के लिए पेशेवर लोगों की मदद ली गयी थी। सुरक्षा एजेंसियों की नजरों से बचने के लिए उसने अपने बच्चों को भी इसी तरीके से ड्रेसअप करवाया था।



जांच एजेंसियों के मुताबिक, जैसा हुलिया सीमा ने बनाया था इस तरह का गेटअप महिलाएं नेपाल–भारत सीमा पर जिस्मफरोशी रैकेट या ह्यूमन ट्रैफिकिंग में शामिल होने और लोगों की नजरों से बचने के लिए करती हैं। इसके अलावा जिस धाराप्रवाह भाषा में सीमा लगातार बात कर रही है ऐसी ट्रेनिंग नेपाल में मौजूद पाकिस्तानी हैंडलर उन महिलाओं को देते हैं, जिनको नेपाल बॉर्डर पार कराकर भारत में गैर–कानूनी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए भेजा जाता है। जांच के दौरान सीमा हैदर को नोएडा स्थित सचिन के गांवतक पहुंचाने में मदद करनेवालों की पहचान नहीं हो पायी है। केन्द्रीय एजेंसियों के मुताबिक, 13 मई को भारत–नेपाल सीमा सुनौली सेक्टर और सीतामढ़ी सेक्टर में अबतक थर्ड नेशन सिटीजन की मौजूदगी की कोई जानकारी सामने नहीं आई है। चार बच्चों को लेकर पाकिस्तान से नेपाल के रास्ते भारत आयी सीमा हैदर और उसके प्रेमी सचिन ने काठमांडू के जिस होटल में सात–आठ दिन रुकने की बात बतायी थी वह जांच में सही निकली। सचिन और सीमा होटल में आये थे जरूर, लेकिन दोनों अलग–अलग। पहले दिन सचिन ने आकर होटल बुक कराया था इसके अगले दिन सीमा होटल आयी थी। दोनों होटल से अलग–अलग निकले भी थे। सीमा के साथ उसके बच्चे नहीं थे, ये अपने आप में एक बड़ा सवाल है कि आखिर, सात दिनों तक सीमा के बच्चे कहां थे? यदि नेपाल आये थे तो यहां किसके पास रुके थे ? सचिन ने होटल में अपना नाम भी गलत बताया था। भारतीय खुफिया और जांच एजेंसियों की जांच के दायरे में अब ऐसे एजेंट भी हैं जो इस तरीके की खास तैयारी कराते हैं। भारत में अवैध तरीके से लोगों को घुसवाने में मदद करते हैं। खुफिया सूत्रोंके मुताबिक भारत–नेपाल सीमापर 13 मई को सीमा हैदर–सचिन के भारत में एंट्री दावों की तस्दीक फिलहाल केन्द्रीय एजेंसियों की जांच में नहीं हो सकी है, क्योंकि दोनों भारतमें एंट्रीका यही दिन बता रहे हैं। ह्वाट्सएप चैट और तमाम सुबूतोंके आधारपर आगे की पूछताछ की जा रही है। सीमा का जो पाकिस्तानी आईडी कार्ड सामने आया है जिसके मुताबिक उनकी उम्र २१ साल है। सीमा के आईडी कार्ड हाई कमीशन को भेजे गये हैं। पता चला है कि सीमा के चाचा पाकिस्तान की आर्मी में सूबेदार हैं और उनका भाई भी पाकिस्तानी सैनिक है। यूपी पुलिसके एक बड़े अधिकारीने कहा कि सीमा एक पाकिस्तानी नागरिक है। उनके भारत आनेमें बहुत सारे पेंच है। ऐसेमें उनसे पूछताछ लाजिमी है। पाकिस्तान में भी इस मामले को लेकर हलचल तेज है। कट्टरपंथी ताकतें लगातार सीमा हैदर का सिर कलम करने की धमकी दे रही है। पाकिस्तान में कुछ नकाबपोश हाथों में हथियार लेकर यह धमकी भी दे रहे हैं कि यदि सीमा हैदर को पाकिस्तान वापस भेजा गया तो उसकी हत्या कर दी जायगी। सवालिया यह भी है कि उन बदमाशों ने बाकायदा वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल भी किया है। कुछ लोग श्बेवफाश सीमा को सरेआम चौराहे पर फांसी देने की भी मांग कर रहे हैं। उसका सार्वजनिक और सामाजिक चरित्र हनन भी किया जा रहा है। इन धमकियों की प्रतिक्रिया में भारत के कुछ हिन्दूवादी संघटनों ने सरकार को चेता दिया है कि यदि 72 घंटों में सीमा को सीमापार नहीं भेजा गया तो फिर आन्दोलन छेड़ा जायगा। बेशक यह मुहब्बत की ऐसी दास्तां हो सकती है, जिसने सरहदों की परवाह नहीं की, लेकिन उसकी खातिर राष्ट्रीय सुरक्षा को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। उत्तर प्रदेश के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा. विक्रम सिंह का मानना है कि आज एक सीमा और चार बच्चे अवैध तरीके से भारत में घुसे हैं। कल 50 सीमाएं और सैकड़ों बच्चे देश में घुसपैठ कर सकते हैं। यह अपराध का मामला है, भावुक होने की जरूरत नहीं है। कल बच्चों के मानवाधिकार का मुद्दा वैश्विक स्तरपर उठाया जा सकता है। उसका जवाब देने में भारत सरकार सक्षम है। हम बंगलादेश और म्यांमार से जारी अवैध घुसपैठ को रोक नहीं पाये हैं। सीमापार और पाकिस्तान परस्त आतंकवाद भी घुसपैठ के जरिये चलाया जा रहा है। यदि एक और समस्या पाल लेंगे तो देश के लिए खतरनाक हो सकता है। सुरक्षा विशेषज्ञों के अनुसार इस तरह के मामले में पूरी तरह से सरकार की चूक है। देश की सीमा पर फोर्स तैनात है लेकिन फिर भी कोई अवैध तरीके से देश में प्रवेश कर गया। इसमें निश्चित तौरपर रॉ, बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स और इंटेलीजेंस की चूक है। दरअसल एटीएस और आईबी की जांच–पड़ताल का फोकस यह है कि क्या सीमा आईएसआई की जासूस है? वह सिर्फ पांचवीं पास है, लेकिन अंग्रेजी भाषा को बखूबी जानती, समझती और बोल लेती है। उसने यह प्रशिक्षण कहां और कब हासिल किया ? एजेंसियां पाकिस्तान से भारत में आने का रूट भी खंगालना चाहती हैं। सीमा के मददगारों तक पहुंचने की कोशिश करना चाहती हैं। सीमा और सचिन के संबंधों की पृष्ठभूमि और हकीकत तक भी पहुंचना चाहती हैं।

प्रधानमंत्री की विदेश यात्राओं से आ रहा व्यापक बदलाव

भारत और यूएई के मध्य भी कई समझौते हुए हैं जिसमें दोनों देश भारतीय और यूएई की मुद्राओं क्रमशः रुपए और दिरहम में व्यापार करेंगे। इससे भुगतान में कम समय लगेगा और मुद्रा बाजार में रुपये–दिरहम में निवेश करने का विकल्प भी खुलेगा।



विगत दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फ्रांस और संयुक्त अरब अमीरात की एक सफल यात्रा की। कुछ समय से प्रधानमंत्री की विदेश यात्राओं से एक परिवर्तन देखा जा रहा है अब उनकी विदेश यात्राएं समय की दृष्टि से छोटी हो रही हैं किंतु अब वे एक साथ कई देशों की यात्रा पर जा रहे हैं। उदाहरण के लिए, प्रधानमंत्री ने अमेरिका यात्रा के साथ मिस्र की यात्रा की और फ्रांस के साथ संयुक्त अरब अमीरात की यात्रा की।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का फ्रांस की राजधानी पेरिस में भव्य स्वागत हुआ और उनको फ्रांस का सर्वोच्च नागरिक सम्मान "द ग्रैंड क्रॉस ऑफ द लीजन ऑफ आनर" से भी सम्मानित किया गया जबकि संयुक्त अरब अमीरात में प्रधानमंत्री मोदी को वहां के राष्ट्रपति ने हाथ में फ्रैंडशिप बैंड बांधकर सम्मान करते हुए भारत और यूएई के मध्य संबंधों के प्रगाढ़ होने का संकेत भी दिया।

प्रधानमंत्री की फ्रांस यात्रा

प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी की यह पांचवीं फ्रांस यात्रा थी। इस बार प्रधानमंत्री फ्रांस की नेशनल परेड के मुख्य अतिथि भी रहे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फ्रांस में भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए कई महत्वपूर्ण बातें कहीं जिनका प्रभाव काफी दूर तक जा रहा है। प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में जी–20 की अध्यक्षता व भारत में आयोजित हो रही बैठकों का उल्लेख किया और चंद्रयान–3 की भी चर्चा। उन्होंने एक रिपोर्ट का उल्लेख करते हुए बताया कि भारत ने करीब 42 करोड़ देशवासियों को गरीबी की रेखा से बाहर निकाला है। उन्होंने कहा कि भारत अगले 25 वर्षों में विकसित देश होने के लक्ष्य पर काम कर रहा है। आज हर अंतरराष्ट्रीय एजेंसी कह रही है कि भारत आगे बढ़ रहा है। अब भारत में निवेश का अवसर है। उन्होंने भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि अब फ्रांस में तमिल कवि और संत तिरुवल्लुवर की की प्रतिमा लगेगी। उनकी लिखी पुस्तक तिरुक्कुरल दुनियाभर में लोकप्रिय है और उसका कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इस माध्यम से उन्होंने तमिलनाडु की जनता को भी संदेश दिया है। इसके पहले प्रधानमंत्री ने अमेरिका में भी तमिल साहित्य और भाषा की लोकप्रियता और विशेषता बताकर तमिलनाडु की जनता का दिल जीतने का प्रयास किया है।

भारत सरकार ने फ्रांस सरकार की सहायता से मार्सिले में एक नया वाणिज्य दूतावास खोलने का निर्णय लिया है। वहां पर अध्ययन करने वाले छात्रों को अब पांच वर्ष का अध्ययन वीजा दिये जाने की घोषणा भी की गई है। भारत और फ्रांस के मध्य अब यूपीआई के माध्यम से डिजिटल पेमेंट की भी व्यवस्था प्रारम्भ हो रही है। भारत और फ्रांस के पारस्परिक सम्बन्ध 300 वर्षों से लगातार चले आ रहे हैं और समय के साथ प्रगाढ़ हो रहे हैं। जब अटलजी की सरकार के समय भारत ने परमाणु परीक्षण किये थे, उस समय फ्रांस ही एकमात्र ऐसा देश था जिसने भारत पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया था और भारत के साथ चट्टान की तरह खड़ा रहा था। फ्रांस संयुक्त राष्ट्र महासभा सहित सभी अंतरर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत के साथ सदा खड़ा दिखाई देता है।

वर्तमान समय में भारत–फ्रांस के मध्य रक्षा सम्बंध भी लगातार प्रगाढ़ हो रहे हैं। फ्रांस मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत में महत्वपूर्ण भागीदार बन रहा हैं। भारत और फ्रांस सौर ऊर्जा और ग्रीन हाइड्रोजन जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भी फ्रांस भारत के साथ खुलकर खड़ा है। भारत और फ्रांस के मध्य 26 लड़ाकू राफेल–एम लड़ाकू विमान खरीदने सहित नौसेन के लिए 3 स्कार्पीन क्लास सबमरीन खरीद का ऐतिहासिक समझौता हुआ है जिससे भारतीय सेना की ताकत बढ़ेगी। आज भारत और फ्रांस के मध्य जो रक्षा समझौते हो रहे हैं उससे भारत के शत्रु राष्ट्रों में बेचौनी है।

संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) की यात्रा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त अरब अमीरात की भी एक दिवसीय यात्रा की। इस छोटी यात्रा के बड़े राजनैतिक निहितार्थ थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यूएई में भी भव्य स्वागत हुआ। यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी और यूएई के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद नाहयान की वार्ता के बाद जारी किये गये संयुक्त बयान के अनुसार दोनों देश क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सभी रूपों में सीमा पार आतंकवाद सहित उग्रवाद और आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में अपने द्विपक्षीय सहयोग को और गहरा करने पर सहमत हो गये हैं। दोनों देशों के रक्षा आदान–प्रदान, अनुभवों को साझा करने, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण को बढ़ाने पर भी सहमति जताई गयी है। सभी प्रकार के उग्रवाद, घृणास्पद भाषण और भेदभाव को त्यागने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

भारत और यूएई के मध्य भी कई समझौते हुए हैं जिसमें दोनों देश भारतीय और यूएई की मुद्राओं क्रमशः रुपए और दिरहम में व्यापार करेंगे। इससे भुगतान में कम समय लगेगा और मुद्रा बाजार में रुपये–दिरहम में निवेश करने का विकल्प भी खुलेगा। पर्यटन भी सुविधाजनक होगा। दोनों देशों के बीच डिजिटल भुगतान मैसेजिंग सिस्टम यानी भारत के यूपीआई और यूएई के भुगतान प्लेटफार्म आईपीपी को आपस में जोड़ा जायेगा। इससे दोनों देशों की जनता को एक–दूसरे देश में कार्ड लेन–देन पर कोई अतिरिक्त चार्ज भी नहीं लगेगा। आइआइटी दिल्ली अबू धाबी (यूएई) में अपना पहला कैंपस खोलेगा। यह मीना क्षेत्र अर्थात मध्य यूएई में भारत का पहला कैंपस होगा।

यूएई में इसी वर्ष जलवायु परिवर्तन पर कॉप–28 सम्मेलन का आयोजन होने जा रहा है, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उसकी सफलता के लिए पूर्ण सहयोग देने का वादा किया है। यूएई भारत के लिए काफी अहम मित्र राष्ट्र है क्योंकि यह भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। भारत और यूएई के मध्य 84 अरब डालर से अधिक का द्विपक्षीय व्यापार प्रगति पर है। यहां प्रवासी भारतीय समुदाय सबसे बड़ा जातीय समुदाय है और कुल आबादी में उसकी तकरीबन 30 प्रतिशत हिस्सेदारी है। 2021 में यहां प्रवासी भारतीयों की संख्या लगभग 30 लाख थी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी फ्रांस में जहां दुनिया का सबसे बड़ा एफिल टॉवर देखने गये वहीं दूसरी ओर यूएई स्थित बुर्ज खलीफा उनके स्वागत में भारतीय तिरंगे से रोशन हुआ और इमारत पर पीएम मोदी की तस्वीर भी दिखाई गयी। यह प्रधानमंत्री की वैश्विक लोकप्रियता को भी दर्शाता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विदेश यात्राओं में श्रेष्ठ भरतीय परम्पराओं को नहीं छोड़ते हैं साथ ही अपनी पुरानी परम्पराओं को नये धागे में पिरोकर भारतीय संस्कृति का मान बढ़ाते हैं और यही कारण है कि संपूर्ण विश्व में भारतीय सनातन संस्कृति का डंका बज रहा है और सभी देशों के लोग इसको समझने के लिए लालायित हैं।

प्रधानमंत्री मोदी की यूएई यात्रा ऐसे समय में हुई है जब भारत में समान नागरिक संहिता को लागू करने की प्रक्रिया का आरंभ हो चुका है और तमाम विरोधी दल मुस्लिम संगठनों का साथ लेकर पूरी ताकत से इसका विरोध कर रहे हैं किंतु जिस प्रकार मिस्र के बाद यूएई में भी प्रधानमंत्री मोदी का सम्मान किया गया है उससे मुस्लिम तुष्टिकरण करने वालों की नींद गायब हो गयी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जिस भी देश की यात्रा पर जाते हैं उस देश में उपस्थित भारतीय समुदाय को भी अवश्य संबोधित करते हैं और भारत के लिए अपने भविष्य की दृष्टि को उजागर करते हैं इससे भारत में चुनावों में उनको पराजित करने के लिए महागठबंधन बना रहे दल व नेता बेचौन हो उठते हैं। जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मिस्र और संयुक्त अरब अमीरात में भव्य स्वागत हुआ तो भारत के अंदर मुस्लिम तुष्टिकरण करने वाले राजनैतिक दल बेचौन हो उठे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व उनकी सरकार को जो अराजक राजनैतिक तत्व मुस्लिम विरोधी बताकर अपनी छवि को सुधारना चाहते थे उनका प्रोपेगेंडा बेनकाब हो गया। यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व उनकी सफल नीतियों का ही परिणाम है कि आज संपूर्ण विश्व में भारत की आवाज को सुना जा रहा है।

राजनैतिक विश्लेषक अनुमान लगा रहे हैं कि वर्ष 2024 का लोकसभा चुनाव व उससे पहले होने जा रहे विधानसभा चुनावों पर मोदी की मिस्र और यूएई आदि देशों की यात्राओं का उदारवादी व लाभार्थी मुसलमानों के बीच अच्छा संदेश जाएगा और विपक्ष भाजपा व मोदी की छवि पर जो आघात करने का प्रयास कर रहा है उससे निपटने में भी आसानी रहेगी। महत्वपूर्ण यह भी है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 2024 के लोकसभा चुनावों को ध्यान में रखकर संबोधन नहीं करते हैं अपितु वह आगामी 25 वर्षों के लिए देश के विकास व विश्व के देशों से संबंधों का रोडमैप बताते हैं जिसके कारण सामान्य जन स्वाभाविक रूप से उनका नेतृत्व स्वीकार करता है और परिवारवादी भ्रष्टाचारी दलों को अपने अस्तित्व पर संकट मंडराया दिखता है।

यहां बात सिर्फ आरोप–प्रत्यारोपों की नहीं है। सवाल सिस्टम के बड़े फेलियर का है। क्या सिर्फ वीडियो वायरल होने के बाद सरकार के संज्ञान में कोई घटना आएगी? उसका तंत्र क्या कर रहा है? क्यों दो महीने तक कोई कार्रवाई नहीं हुई? क्या लोगों की निशानदेही नहीं की जा सकती थी? ऐसे कई बड़े सवाल हैं। घटना का वीडियो बहुत परेशान करने वाला है। समाज में रहने वाला व्यक्ति इस वीडियो को देखते ही गुस्से से लाल हो रहा हैं, इतिहास साक्षी है जब भी किसी आतातायी ने स्त्री का हरण किया है या चीरहरण किया है उसकी कीमत संपूर्ण मनुष्य जाति को चुकानी पड़ी है। हमें स्मरण रखना चाहिए– स्त्री का शोषण, उसके ऊपर किया गया अत्याचार, उसका दमन, उसका अपमान.. आधी मानवता पर नहीं बल्कि पूरी मानवता पर एक कलंक की भाँति है। एक समाज के रूप में क्या हम सचमुच मर गए हैं? एक पांचाली के चीरहरण से राजवंश नष्ट हो गए और यहाँ पार्टियों के पक्षकार अभी भी अपनी–अपनी दुकानों और मालिकों को जस्टिफाई कर रहे हैं? अब 'लोकतंत्र' के चार चरण विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका व पत्रकारिता को एक दूसरे के साथ लय से लय मिलाकर चलना होगा। तभी वे लोक को अमानुषिक कृत्यों के प्रलय के ताप से मुक्त कर पाएंगे।

चीरहरण को देख कर, दरबारी सब मौन
प्रश्न करे अँधराज पर, विदुर बने वो कौन



महिलाओं के साथ अत्याचार कहीं नहीं होना चाहिए। लेकिन कम से कम मणिपुर कांड को इग्नोर मत कीजिए। दूसरे उदाहरण देकर मामले को हल्का मत कीजिए, वरना जब आज के दौर का इतिहास लिखा जाएगा तो यही कहा जाएगा कि देश के एक कोने में महिलाओं के कपड़े उतारे गए थे और लोग दूसरे राज्यों की तरफ मुंह करके खड़े थे। जब मणिपुर में महिलाओं का चीर हरण देखकर लोगों का खून खौल रहा है तो कुछ लोग यह भी कह रहे हैं कि राजस्थान और बंगाल में जब महिलाओं से अत्याचार होता है तो देश में इतना हंगामा क्यों नहीं होता? कुछ लोग टूलकिट एंगल भी ले आए हैं। मणिपुर कांड पर सवाल पूछने पर जवाब नहीं उल्टे आपसे ही सवाल पूछे जा रहे हैं कि तब कहां थे? तब क्यों नहीं लिखा? तब क्यों नहीं बोला? संसद में क्यों हंगामा नहीं हुआ? मतलब इस घिनौने कांड पर सियासी खेल शुरू हो गया है। लोकतंत्र में सबको अपनी बात रखने का अधिकार है और एक पक्ष यह भी है। मान लेते हैं। लेकिन क्या इस तर्क के आगे दंडवत होकर हम सभी को मणिपुर से अपनी आंखें हटा लेनी चाहिए। क्या सभी को धृतराष्ट्र बन जाना चाहिए? शर्म है, कलियुग का ऐसा कालखंड आया है कि दुरूशासनों की भीड़ इंसानियत की देह से कपड़े उतारती है और कोई उन्हें बचाने नहीं आता।

बचाना तो छोड़िए दो महीने तक गुस्सा भी नहीं दिखता। अगर सवाल का जवाब सवाल से ही देना है तब तो हर क्राइम के बाद यही कीजिए। न सरकार को कुछ कहने की जरूरत पड़ेगी, न पुलिस को। हर चीज का कारण तो होता ही है फिर सरकार का क्या रोल है? शासन–प्रशासन क्राइम को नहीं रोक सकता, अंकुश तो लगा सकता है न, चलिए मान लिया अंकुश न सही तो क्राइम होने पर अपराधियों को सजा तो दिलवा ही सकता है न। या फिर सब हवा हवाई है। राजस्थान हो या बंगाल, अगर वहां से भी वीडियो आया होता तो बेशक पूरे देश में गुस्सा देखा जाता और घटना होने पर गुस्सा देखा गया है। संसद तक हंगामा भी होता। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मणिपुर या दूसरे किसी राज्य में इस तरह की दरिंदगी को इग्नोर कर दिया जाए।

जान लीजिए कि यह जनता की अति–अपेक्षा का ही नतीजा है कि लोग मणिपुर में इस तरह की सुस्ती की उम्मीद नहीं कर रहे थे। 9 साल में जनता ने यही जाना और समझा है कि यह सरकार पिछली सरकारों से ज्यादा सख्त और क्राइम–करप्शन पर श्जीरो टॉलरेंसश के रास्ते पर चल रही है। वहां तो दो इंजन वाला फॉर्म्युला भी था। केंद्र और राज्य में भी भाजपा की सरकारें हों तो फिर ताबड़तोड़ छापेमारी करने में दो महीने कैसे लग गए?

महिलाओं को नग्न अवस्था में घुमाने का वीडियो सामने आने के बाद पूरे देश में गुस्सा है। इसे लेकर प्रतिक्रियाओं की बाढ़ आ गई है। चीफ जस्टिस ने कहा है कि ऐसी घटना को स्वीकार नहीं किया जा सकता है। यह मानवाधिकारों और संविधान का सबसे बड़ा उल्लंघन है। इस मामले में उन्होंने सॉलिसिटर जनरल और अटॉर्नी जनरल को कोर्ट में पेश होने के लिए कहा है। इस घटना पर कोर्ट ने स्वत संज्ञान लिया है। यहां बात सिर्फ आरोप–प्रत्यारोपों की नहीं है। सवाल सिस्टम के बड़े फेलियर का है। क्या सिर्फ वीडियो वायरल होने के बाद सरकार के संज्ञान में कोई घटना आएगी? उसका तंत्र क्या कर रहा है? क्यों दो महीने तक कोई कार्रवाई नहीं हुई? क्या लोगों की निशानदेही नहीं की जा सकती थी? ऐसे कई बड़े सवाल हैं। घटना का वीडियो बहुत परेशान करने वाला है सभी समाज में रहने वाला व्यक्ति इस वीडियो को देखते ही गुस्से से लाल हो रहा हैं, इतिहास साक्षी है जब भी किसी आतातायी ने स्त्री का हरण किया है या चीरहरण किया है उसकी कीमत संपूर्ण मनुष्य जाति को चुकानी पड़ी है। हमें स्मरण रखना चाहिए– स्त्री का शोषण, उसके ऊपर किया गया अत्याचार, उसका दमन, उसका अपमान.. आधी मानवता पर नहीं बल्कि पूरी मानवता पर एक कलंक की भाँति है।

एक समाज के रूप में क्या हम सचमुच मर गए हैं? एक पांचाली के चीरहरण से राजवंश नष्ट हो गए और यहाँ पार्टियों के पक्षकार अभी भी अपनी–अपनी दुकानों और मालिकों को जस्टिफाई कर रहे हैं? अब 'लोकतंत्र' के चार चरण विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका व पत्रकारिता को एक दूसरे के साथ लय से लय मिलाकर चलना होगा। तभी वे लोक को अमानुषिक कृत्यों के प्रलय के ताप से मुक्त कर पाएंगे। अब समय आ गया है जब सभी राजनीतिक दलों और राजनेताओं को, मीडिया हाउसेस व मीडिया कर्मियों को अपने मत–मतान्तरों, एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोपों को भूलकर राष्ट्र कल्याण, लोक कल्याण के लिए सामूहिक रूप से उद्यम करना होगा क्योंकि ये राष्ट्र सभी का है, सभी दल और दलपति देश और देशवासियों के रक्षण, पोषण, संवर्धन के लिए वचनबद्ध हैं।

प्रियंका सौरभ



बेंगलुरु। कर्नाटक विधानसभा से भाजपा के 10 विधायकों के निलंबन के विरोध में विधानसभा के बाहर विरोध करने पर पूर्व मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई समेत अनेक विधायकों को विरासत में गत दिनों बुधवार को विधायक सौदा थाने ले जाया गया । सोच है कि कर्नाटक विधानसभा अध्यक्ष यूटी खादर ने गत बुधवार को अशोभनीय एवं अपमानजनक आचरण के लिए भाजपा के 10 विधायकों(बी. सुनील कुमार , आर. अशोक, आरागा ज्ञानेंद्र, (सभी पूर्व मंत्री) डी. वेदव्यास कामथ, यशपाल सुवर्ण, धीरज मुनिराज, ए. अमरनाथ कोटियन, अरविंद बेलाड, और वाई भरत शेट्टी) को विधानसभा के शेष शस्त्र से निलंबित कर दिया गया। यह कार्यवाही विधानसभा सत्र में हंगामे के उपरांत की गयी।



जयपुर । उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री शकुंतला रावत ने गत बुधवार को उद्योग भवन में आगामी माह अगस्त में पांच दिवसीय जवाहर कला केंद्र में आयोजित होने वाले नेशनल हैंडलूम वीक के ब्रोशर का विमोचन किया। इस दौरान विशिष्ट शासन सचिव आयुक्त ओम कसेरा रिकी प्रबंध निदेशक संयुक्त शासन सचिव सचिव खादी बोर्ड अतिरिक्त निदेशक सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

विमोचन उपरांत श्रीमती रावत ने पत्रकार वार्ता के दौरान कहा कि इस पांच दिवसीय आयोजन में प्रदेश के बुनकर हथकरघा एवं खाद्य उद्योग के उत्पादन को प्रोत्साहन एवं खाद्य उत्पादों की अस्थिरता तथा विशेष रूप से 10 राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त बुनकर भी अपने उत्पादों का विक्रय एवं प्रदर्शन करेंगे ।

राजनीतिक से ज्यादा प्रशासनिक तंत्र की लापरवाही का नतीजा होते हैं तमाम हादसे

मेरठ एक्सप्रेस वे पर बस और कार की टक्कर महज हादसा नहीं थी, बल्कि वह प्रशासनिक लापरवाही का नतीजा रही। एक्सप्रेस वे पर आठ किलोमीटर तक कोई बस कैसे गलत दिशा में दौड़ती रह सकती है? इसका अनुमान तंत्र को होना चाहिए और उसे रोकने का इंतजाम भी उसे ही करना चाहिए।



प्राकृतिक आपदाओं पर किसी का वश नहीं। लेकिन इन आपदाओं से जुड़ी कुछ घटनाएं और सामान्य हादसे ऐसे होते हैं, जिन पर काबू पाया जा सकता था। हाल के दिनों में घटी कुछ घटनाओं को इन्हीं श्रेणियों में रखा जा सकता है। इन घटनाओं ने देश और समाज को विचलित कर दिया। पहली घटना रही मेरठ से दिल्ली को जोड़ने वाले एक्सप्रेस वे पर हुई दुर्घटना, जिसमें गलत दिशा से आ रही एक बस से कार की आमने–सामने की टक्कर हुई, जिसमें एक हंसता–खेलता परिवार खत्म गम और आंसुओं के समंदर में डूब गया। इस हादसे के कुछ ही दिन पहले दिन में हुई जोरदार बारिश ने दिल्ली को जैसे झील में तब्दील कर दिया। कुछ इसी तरह हिमाचल प्रदेश भी डूब रहा है। मंडी जिले में तो सड़कों पर मलबे की बाढ़ आ गई। इन घटनाओं में पहली नजर में कोई समानता नजर नहीं आती। एक जहां सड़क हादसा है तो दूसरी–तीसरी घटना प्राकृतिक आपदा है। लेकिन इन घटनाओं में समानता इस लिहाज से है कि इनसे बचा जा सकता था या उनसे होने वाले नुकसान को कम से कम किया जा सकता था।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में सबसे ज्यादा सवालों के घेरे में राजनीतिक तंत्र होता है। लोगों के मत से चुनकर आने की वजह से उन पर सवाल होना भी चाहिए। हमने जिस तरह का नैरेटिव विकसित किया है, उसमें मोहल्ले की गड़बड़ी से लेकर राष्ट्रीय समस्या के लिए सिर्फ और सिर्फ राजनीतिक तंत्र ही जिम्मेदार माना जाता है। इसलिए सवालों के घेरे में वही सबसे ज्यादा रहता है। लेकिन सवाल यह है कि क्या सिर्फ राजनीतिक तंत्र ही इसके लिए जिम्मेदार है? क्या यह सवाल नहीं उठना चाहिए कि इसके लिए व्यवस्था और उसके सबसे अहम अंग नौकरशाही जवाबदेह नहीं है?

नौकरशाही पर सबसे वैज्ञानिक और स्वीकार्य अध्ययन जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर का माना जाता है। उन्होंने लोकतांत्रिक व्यवस्था में निरंतरता के लिए नौकरशाही और प्रशासनिक तंत्र को बेहतरीन जरिया बताया है। अपने इसी अध्ययन में मैक्स वेबर नौकरशाही की नकारात्मक भूमिका की ओर भी ध्यान दिलाते हैं। उनका मानना है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था की नौकरशाही नियमों और उसकी प्रक्रिया को ही अपना लक्ष्य मान लेती है।

दफ्तरी सोच की वजह से यह तंत्र एक तरह से कल्पनाहीन विशेषज्ञों का समूह विकसित करने लगती है। चाहे मेरठ एक्सप्रेस वे पर हुआ हादसा हो या दिल्ली के डूब जाने की कहानी या फिर ऐसी ही कोई और घटना, हर घटना या हादसे का विश्लेषण करेंगे तो पाएंगे कि हमारा व्यवस्था तंत्र भी कल्पनाहीनता की सुरंग में समाता जा रहा है। मेरठ एक्सप्रेस वे हुई घटना महज हादसा नहीं है, बल्कि प्रशासनिक तंत्र की लापरवाही भी है। दिल्ली अगर डूब रही है, यहां की सड़कें अगर धंस रही हैं, कुछ साल पहले अगर पटना डूब रहा था, अगर मंडी की गलियों में मलबा बह रहा है, कुछ साल पहले जयपुर की सड़कें अगर मलबे से डूब गई थीं, तो इसके मूल में कहीं न कहीं भारतीय तंत्र की कल्पना और अनुमानहीनता की कमी ज्यादा जिम्मेदार रही है। हमारा तंत्र हादसों और घटनाओं के बाद चेतता है। वह उन हादसों और घटनाओं का अनुमान लगाकर उन्हें रोकने या बाधित करने के लिए जरूरी कदम नहीं उठा पाता।

पुरानी पीढ़ी के लोग अपने अनुभवों के आधार पर कहते रहे हैं कि आजादी के पहले की नौकरशाही ज्यादा कल्पनाशील थी। वह अपनी हर योजना भविष्य, भावी अनुमानों और उस पर आधारित परिणामों को ध्यान में रख बनाती थी। आईसीएस यानी इंपीरियल सिविल सर्विस ही आज की भारतीय नौकरशाही की मूल है। लेकिन लगता है कि उसने अपने पूर्ववर्ती तंत्र का यह गुण आत्मसात नहीं किया। साल 1922 में ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री डेविड लॉयड जॉर्ज ने तत्कालीन ब्रिटिश नौकरशाही को ब्रिटिश राज का स्टील फ्रेम बताया था। तब की नौकरशाही ने ब्रिटिश सरकार को बचाने के लिए स्टील फ्रेम की तरह काम तो किया, उसे बनाए रखने के लिए भी अपनी कल्पनाशीलता का सहारा लिया। उन्होंने जो योजनाएं बनाईं, जो निर्माण किए, वे अरसा बाद तक अप्रासंगिक नहीं हुए। लेकिन उसकी तुलना में आज के तंत्र को देख लीजिए। उसकी बनाई योजना, उसके हिसाब से उठाए कदम जल्द ही अप्रासंगिक हो जाते हैं। दिल्ली अगर डूब रही है तो कहीं न कहीं दिल्ली के तंत्र की सोच भी इसके लिए जिम्मेदार है। जब सामान्य जन तक को पता है कि दिल्ली में जून के आखिर में मानसून आ जाएगा, ऐसे में शहर के ड्रेनेज को बहाने वाले नालों की सफाई हर हाल में मई तक हो जानी चाहिए थी, सड़कों की खुदाई और मरम्मत तक मई या अधिकतम जून के बीच तक हो जाना चाहिए था। लेकिन दिल्ली घूमिए, कई सड़कों पर सीवर लाइनें मई में बनानी शुरू हुई हैं। अरबिंदो मार्ग के दोनों तरफ की सड़क को ठीक मानसून आने के पहले खोद दिया गया।

मेरठ एक्सप्रेस वे पर बस और कार की टक्कर महज हादसा नहीं थी, बल्कि वह प्रशासनिक लापरवाही का नतीजा रही। एक्सप्रेस वे पर आठ किलोमीटर तक कोई बस कैसे गलत दिशा में दौड़ती रह सकती है? इसका अनुमान तंत्र को होना चाहिए और उसे रोकने का इंतजाम भी उसे ही करना चाहिए। देशभर की ट्रैफिक पुलिस को देखिए, वह सिर्फ दंडात्मकर कार्यवाही में जुटी रहती है। वह इस ताक में रहती है कि कोई ट्रैफिक नियम तोड़े, ताकि वह उसे पकड़ कर कभी अपनी तो कभी सरकारी खजाने को भर सके। जबकि होना चाहिए कि वह ट्रैफिक को सही तरह से आगे बढ़ाती रहे। नगर निगमों के अधिकारियों की कार्यप्रणाली देखिए। गलियों में शोर बढ़ता रहे, गलियां अतिक्रमण से संकरी होती रहें। गलत तरीके से निर्माण होता रहे, ऐसे मामलों के खिलाफ निरोधात्मक कार्रवाई की बजाय निगम का तंत्र अपनी जेब भरने और ऐसे मामलों में उदासीनता बरतता रहता है। पुलिस और प्रशासनिक तंत्र भी इसमें शामिल रहता है। हां, जब उन्हीं गलियों में कोई हत्या हो जाती है, कभी बलवा हो जाता है, या आग लग जाती है और अतिक्रमण के चलते फायर ब्रिगेड की गाड़ियां नहीं घुस पातीं तो तंत्र का समूचा हिस्सा जैसे सोते से जाग जाता है। फिर कार्रवाइयां होती हैं। ऐसा करके तंत्र एक तरह से अपनी गलतियों पर लीपापोती ही करता है। इसके बाद वह अगले हादसे तक लंबी तानकर सो जाता है।

पंडित नेहरू के सचिव रहे एमओ मथाई ने अपनी किताब 'रेमेनेंसेज ऑफ नेहरू एज' में लिखा है कि नेहरू इंपीरियल सिविल सर्विस को लेकर बहुत सकारात्मक नहीं थे। वे इसे भंग कर देना चाहते थे। लेकिन पटेल ने उन्हें मनाया। उसके बाद तंत्र को लेकर नेहरू की राय बदली। तब उम्मीद की जा रही थी कि भविष्य में तंत्र भारत की बदली स्थितियों के मुताबिक सोच लेकर आगे बढ़ेगा। लेकिन अब तक के अनुभव बताते हैं कि ऐसा कम ही हो पाया। मानव जनित हादसों से बचा जाए और प्राकृतिक हादसों से होने वाले नुकसान को कम से कम करना तभी संभव होगा, जब हमारा तंत्र अनुमान केंद्रित बने, कल्पनाशील बने और अपने दफ्तरी खांचे, नियम–कायदे और प्रक्रिया के घेरे से बाहर निकले। इसके लिए जरूरी कदम उठाया जाना होगा। पूरे तंत्र की एक तरह से ओवरहालिंग करनी होगी। तंत्र में शामिल होने वाले लोगों को सेल्फ स्टार्टिंग बनाना होगा, इसके लिए उनकी ट्रेनिंग प्रक्रिया में जरूरी बदलाव करना होगा। उससे निकले नौकरशाह कहीं ज्यादा कल्पनाशील होंगे, जिन्हें जमीनी समस्याओं और आगामी परेशानियों का भान होगा। तभी वे आज की तुलना में कहीं बेहतर बदलाव लाने का औजार बन सकेंगे। अन्यथा मेरठ ना सही, किसी और एक्सप्रेस वे पर हादसा होगा, मासूम जानें जाएंगी, दिल्ली ना सही कोई और शहर डूबेगा, किसी अन्य शहर की गलियां मलबे में डूबेंगी।



गोरखपुर विश्वविद्यालय से लेकर कैंट थाने तक एबीवीपी कार्यकर्ताओं ने हंगामा व तोड़फोड़ किया।



समाचार पत्र विक्रेता संघ लिखा मॉग पत्र

गोरखपुर। समाचार पत्र विक्रेता संघ की मासिक बैठक 14 जुलाई को टाउनहाल के मैदान में लक्ष्मी बाई प्रतिमा के पास जिलाध्यक्ष उमाशंकर मझवार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सर्व सम्मत से निर्णय लिया गया कि सभी प्रेस मालिकों को ई–मेल द्वारा मॉंग पत्र भेज दिया जाय तथा 15 दिन का एक और मौका दिया जाय। अन्यथा रेलवे स्टेशन सेन्टर पर सबसे पहले दो मॉग पत्र का बैनर लगाना बहुत जरूरी है ताकि सभी समाचार पत्र विक्रेता में अपनी मॉग समझ में आ जाये। बैठक में उपस्थित रामाज्ञा निषाद, नवनीत कुमार यादव, राकेश यादव, धर्मेन्द कुमार, विजय कुमार गुप्ता, राजेन्द्र कुमार मझवार, सुभाष चन्द मझवार, राज कुमार गुप्ता, महेश चन्द्र कन्नौजिया, हरीलाल मझवार, चन्दन मझवार, ओम प्रकाश मझवार, सुनील साहनी, रामचन्द्रर मझवार, सुनील कुमार गुप्ता आदि लोग उपस्थित थे।

चन्द्रयान–3 के सफल प्रेक्षपण पर राजद कार्यकर्ताओं ने दी बधाई

गोरखपुर। समाचार पत्र विक्रेता संघ एवं राष्ट्रीय जनता दल के कार्यकर्ताओं ने चन्द्रयान–3 के सफल प्रेक्षपण को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि देश के इतिहास में यह सफल परीक्षण युवा वैज्ञानिक को सन्देश है कि आने वाली समय में पूरे वर्ड में भारत की आगे रहना पड़ेगा। समाचार पत्र विक्रेता संघ के अध्यक्ष उमाशंकर मझवार एवं राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष महेन्द्र सिंह राणा ने इस उपलब्धि का ऐतिहासिक करार दिया और इसरो के वैज्ञानिको को बधाई देते हुए कुशल की कामना करते है। बधाई देने वालों में विनोद तिवारी, रामाज्ञा निषाद, नवनीत कुमार यादव, गंगा प्रसाद यादव, गोवरी प्रसाद यादव, विजय कुमार गुप्ता, नन्द लाल अग्रहरी, ओम प्रकाश अग्रहरी, मुक्तिनाथ अग्रहरी, दिनेश चन्द्र अग्रहरी, अंजनी मझवार, डा० राम केवल मझवार, तुफानी लाल मझवार, प्रमोद कुमार मझवार, राधेश्याम मझवार, के०पी० चौधरी, सुभाष चन्द्र मझवार, विनोद कुमार, सत्येन्द्र गुप्ता, सुजीत निगम आदि लोगों ने बधाई दी

मिट्टी से सौंधी महक आ रही है

अब मिट्टी से सौधी महक आ रही है
आई है ऋतू देखो अब बरसात की
सपने सजने लगी प्रिया के साथ की
चिड़ियो की कैसी चहक आ रही है
अब मिट्टी से सौधी महक आ रही है
गिर रहे है धरा पर शबनम के बूंद
मन हो रहा है अब पहले से मलिंद
ऐसे मे बादल सब को रिझा रही है
अब मिट्टी से सौधी महक आ रही है
यादों की देखो कैसी ये घटा घनघोर
जैसे चाहत की होती नही कोई छोर
याद प्रिया की ऐसे मे तरसा रही है
अब मिट्टी से सौधी महक आ रही है
मन ही मन देखते है ख्याब भी कई
अहसासे जुड़ी है अब नित नई–नई
यह अहसास मन को गुदगुदा रही है
अब मिट्टी से सौधी महक आ रही है
प्रकृति की देखो छटा बड़ी निराली
हर तरफ फैली देखो अब हरियाली
धानी आँचल धरा की लहरा रही है
अब मिट्टी से सौधी महक आ रही है

प्रमेशदीप मानिकपुरी
आमाचानी धमतरी छ.ग.

मानव उत्थान सेवा समिति के तत्वाधान में गुरु पूजा सम्पन्न

गोरखपुर। मानव उत्थान सेवा समिति के तत्वाधान में दिनांक–08.07.2023 को गुरु पूजा पर्व बड़े ही धूम–धाम से सदगुरु देव सतपालजीमहाराज के परम शिष्या महात्मा वीरा बाई एवं महात्मा हेम प्रभा बाई तथा कुश. ीनगर के महात्मा सुनीता बाई के देख रेख में समय 12 बजे से 3 बजे तक आश्रम गोरखपुर बशारतपुर में गुरु पूजा पर्व मनाया गया। सर्वप्रथम सदगुरु देव श्रीसतपाल जी महाराज एवं सभी विभूतियो को माल्यार्पण किया गया।

गुरु ब्रम्हा गुरु विष्णुः गुरु देव महेश्वरः
गुरु साक्षात्परं ब्रहमः तस्मै श्री गुरुवे नमः।
वन्दे बोध मयं नित्यं गुरु शंकर रुपिणम्,
अखण्ड मण्डला कारं व्याप्तं येन चराचरम ।।
तत्पदं दर्शितम येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ।

महात्मा वीरा बाई ने कहा–व्यास महाराज का जन्मदिन आज ही के दिन हुआ था जो वेदो में लिखा हुआ था उनके याद में गुरु पूर्णिमा मनाया जाता है। गुरु की महानता परलोक में भी काम आता है। गुरुवर के रहमत से बन्दे गुरु दरबार न छुटे, गुरु का प्यार न छुटे। महात्मा हेम प्रभा बाई एवं महात्मा सुनीता बाई ने गुरु पूजा के अवसर पर श्री सतपाल महाराज के जीवन पर कल्याणकारी भजन सुनाये। गुरु बिन भवनिधि तरे ना कोई, जो विरच शंकर सम होई। धूल तेरे चरणो की सदगुरु चन्दन और अबीर बनी, जिसने लगायी निज मस्तक पर उसकी तो तकदीर बनी। कबीर दास जी ने कहा कि गुरु गोविन्द दोउ खड़े काके लागे पाउ, बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताये। जब से मिले गुरु जी हमार, बहार आईल जिन्दगी में। यह वही दरबार है जहाँ तकदीर बदल जाती है। गुरु चरणो में जिसने आयी उसका बेड़ापार हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम अन्धेर नगरी चौपट राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा का नाटक बच्चो ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में मुख्य सहयोगी– उमाशंकर मझवार एस०पी० सिंह, जोगेन्दर जयसवाल, सुनील आश्रमवासी, बसन्त गुप्ता, पन्नेलाल, मिर्चा यादव, उदय प्रताप गौड़, पुरुषोत्तम जयसवाल, महेन्द्र प्रसाद ओझा, अयोध्या प्रसाद गुप्ता,

कुलदीप सोनी, अनील यादव, परमेश्वर लाल श्रीवास्तव, राम सजन, बलराम अग्रवाल, लीला देवी, कुसुम देवी, चन्दा देवी, पुष्पा देवी आदि लोग सहयोगी थे।

चकबंदी लेखपाल ने जमीन नाप में की त्रुटि :

दबंगों ने ट्रस्ट को दान में मिली जमीन को कब्जाने की करी कोशिश

आगरा। बृजलोक साहित्य कला संस्कृति अकादमी ट्रस्ट, गांव रिहावली, फतेहाबाद, आगरा को दानध्भेंट में मिली जमीन पर गांव के ही दबंगों ने कब्जा करने की जबरदस्ती कोशिश की । आपको बता दें कि उक्त जमीन के टुकड़े पर विवाद तब खड़ा हो गया जब चकबंदी लेखपाल विमल कुमार ने जमीन की नाप तोल में त्रुटि कर दी । दिनांक 19 जुलाई 2023 को जब पहली बार जमीन को बगैर किसी विवाद के सभी की सहमति से नापा गया और जमीन (मूल मालिक पूरन सिंह पुत्र स्व. रुस्तम सिंह) के नाम नाप कर मेंड़ का निर्माण करा दिया गया । फिर दूसरे दिन दबंगों व चकबंदी लेखपाल विमल कुमार के बीच क्या खिचड़ी पकी ये तो वही जाने। तीसरे दिन चकबंदी लेखपाल जमीन को नापने पुनः यह कहते हुए आ गये कि 19 जुलाई 2023 को हमसे त्रुटि हो गई थी । उक्त जमीन (पूरन सिंह द्वारा ट्रस्ट को भेंट) का रकबा घटेगा और जमीन को पुनः नापने लगे। जमीन को पुनः नापने पर ट्रस्ट के अध्यक्ष मुकेश कुमार ऋषि



वर्मा ने वीडियो रिकॉर्डिंग करते हुए शालीनता से पूछा कि महोदय उस दिन आपसे भूल कैसे हुई, क्या पहली बार हुई है, क्योंकि अधिकांश ग्रामीण जनों की यही शिकायत है कि लेखपाल विमल कुमार महोदय लोगों की जमीन कई– कई बार नाप कर चक इधर–उधर यह कहकर खिसका देते हैं कि नापने में त्रुटि हो गई थी । सवाल यह है कि लेखपाल महोदय से यह त्रुटि बार–बार क्यों हो जाती है ।

इस त्रुटि के कारण गांव में आपसी भाईचारा पूरी तरह से खत्म हो चुका है । वहीं वीडियो रिकॉर्डिंग के साथ जब चकबंदी लेखपाल विमल कुमार से जमीन की नाप तोल को लेकर ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने सवाल किये तो ट्रस्ट के पदाधिकारियों को धमकाते व हड़काते हुए अपना सरकारी कार्य छोड़ भाग निकले । उक्त सारा वाकया कैमरे में कैद है ।

ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने कहा सर आप हमारे सवालों के जवाब देकर अपना कार्य पूर्ण करें। चूंकि यह जांच का विषय है कि चकबंदी लेखपाल विमल कुमार से उक्त गलती हुई है अथवा जानबूझकर विवाद खड़ा किया गया है ।

कुछ भी रहा हो चकबंदी लेखपाल विमल कुमार के कारण ट्रस्ट को अत्याधिक क्षति हो रही है।

मुझे चंद्रयान 3 बन जाना है

मुझे भी भारत का नाम चमकाना है
चंद्रयान 3 बनकर मुझे चंद्रमा पर जाना है
जो भी खार खाते हैं हमसे पड़ोसी मुल्ख
उनकी छाती पर मूंग दल कर आना है
अमेरिका और चीन जहां जा पहुंचे हैं
तिरंगा भारत का वहां भी फहराना है
भारत भी अब किसी से कम नहीं
पूरे विश्व को यही समझाना है
डरते हम नहीं किसी से
न ही किसी को हमने धमकाना है
पर जो आंख उठा कर देखेगा
उसकी आंख को नीचा करके आना है
जलते हैं जो हमसे उनको और जलाना है
कम नहीं किसी से हम ठोकर पे हमारी जमाना है
हमसे मुकाबला क्या कर पाओगे तुम
कुछ नहीं बचा तेरे पास तो खाली खजाना है
लिख देंगे चांद पर हम एक नई कहानी
बनेगा इक दिन यह अफसाना है
अलग अलग जात पात मजहब हैं हमारे
पहले हम हिंदुस्तानी सब को यह बताना है

रवींद्र कुमार शर्मा
घुमारवीं

भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन

निई दिल्ली। द्वारका में समाचार निर्देश के संपादक महोदय मुकेश के द्वारा व सीमा रंगा इन्द्रा ,तनूश्री व समाचार निर्देश का पूरा स्टाफ मौजूद रहेगा। भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन करवाया जा रहा है।

कवि सम्मेलन सुबह 10:00 बजे से शुरु हो जाएगा ।जिसमें देश विदेश से तकरीबन 33 कवि पधार रहे हैं हिंदी साहित्य का प्रचार –प्रसार कर रहे इन कवियों का सांस्कृतिक समारोह के साथ–साथ कविता पाठ व सम्मान समारोह का भी मुकेश कुमार जी द्वारा आयोजन किया गया है।

इस कवि सम्मेलन में कवियों के द्वारा गजल, शायरी, कविताएं व गीत गुनगुनाए जाएंगे।

कवि सम्मेलन में हमारे भारतवर्ष के हरियाणा , पंजाब ,राजस्थान ,मध्य प्रदेश ,हिमाचल प्रदेश ,उत्तर प्रदेश, नोएडा और दिल्ली से कवि पधार रहे हैं।

कवि सम्मेलन में पधार रहे कवियों की सूची इस प्रकार है।

इस प्रोग्राम में कवि व साहित्यकार प्रेमपाल सागर करनाल से भी पधार रहे हैं। सीमा रंगा 'इन्द्रा' हरियाणा, डा.नाथू लाल लोटवाड़ा दिल्ली, जयसिंह 'जीत' झज्जर, आलोक अजनबी रोहतक, खुशबू जैन , रोहतक, रश्मिश्री, गोरखपुर (उ प्र), कु० संगीता श्गीतश गुरुग्राम,सोनू 'संजीदा' नारनौंद, सुरेंद्र 'सागर' हरियाणा, अशोक भारद्वाज दिल्ली , रामेश्वर 'देव' करनाल,पवन शर्मा हिमाचल प्रदेश , राजपाल , कुंजपुरा, मनोज मधुरभाषी,पूनम सिंह भदोरिया दिल्ली ,गीता राघव दिल्ली , हेमंत जगदीश शर्मा नोएडा ,पंकज सिंह 'दिनकर' (अर्कवंशी) लखनऊ उत्तर प्रदेश ,राधेश्याम मेहरा (राजस्थान),साहिल सिंगला , करनाल,कौशल समीर हरियाणा ,मनोत फगवाड़ा पंजाब , डॉ. चंद्रदत्त शर्मा रोहतक , डॉ स्मृति कुलश्रेष्ठ, दिल्ली , .निशु नागपाल फरीदाबाद,मोहन तोमर मध्यप्रदेश , लीला धर चौबिसा (अनिल) चित्तौड़गढ़ (राज.) , शकुन्तला (जींद),राजख्यालिया (रोहतक),.डा. संगीता शर्मा हिमाचल प्रदेश, पियूष गोयल नोएडा, कंचन कुमार माखीजा,कमलेश कुमार हरियाणा।

राष्ट्रीय उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान–2023 से सम्मानित हुए रूपेश

सिवान। बिहार के युवा साहित्यकार एवं शोध छात्र, शिक्षक रूपेश कुमार को साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवम शिक्षा मे विशेष उपलब्धि के लिए राष्ट्रीय संस्थान श्जन दृष्टी संस्थान,बदायू के संस्थापक हरि प्रताप सिंह राठौड़, राष्ट्रीय सचिव पल्लवी शर्मा एव शीतल विजय भूतेश्वर के कर कमलो द्वारा सम्मानित किया गया। इनको हाल ही में भारत माता अभिनंदन संघठन की ओर से संस्था की राष्ट्रीय प्रभारी ऋतु गर्ग जी के द्वारा भारत माता अभिनंदन सम्मान – 2023 से भी सम्मानित किया गया है। युवा साहित्यकार के विभिन्न सांझा संग्रह, चार एकल संग्रह विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, शैक्षणिक विषयों पर आलेख प्रकाशित हो चुके है । वर्तमान मे रूपेश विज्ञान के शोध छात्र, शिक्षक एंव प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रहे है लेकिन साहित्य एव शिक्षा मे इनकी काफी रूचि है रूपेश गरीब छात्रों को वर्षों से निशुल्क, निस्वार्थ भाव से शिक्षा दे रहे है जिसके कारण इनको देश ही नही विदेशों से भी अनेकों सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। रूपेश के संपादकीय मे भी चार साहित्यिक पुस्तकें आ चुकी है। रूपेश अद्भुत प्रतिभा के धनी है जिसके कारण इनकी रचनाओं को देश– विदेशों के पत्र पत्रिकाओं में जगह मिल चुकी है।

भौतिक विज्ञान का छात्र होते हुए भी साहित्य मे आपका विशेष स्थान है। इनको मिले इस सम्मान के लिए सुप्रीम कोर्ट दिल्ली की लॉ ऑफिसर अनुजा मिश्रा, मुजफ्फरपुर की लेक्चरर निधी कुमारी, शिक्षिका जुही मिश्रा, राजस्थान की प्रोफेसर डॉक्टर टीना राव, कवयित्री, नर्तकी, एंकर, लेक्चर डॉ लक्ष्मी देवी शर्मा, पटना से रिचा प्रसाद, दिल्ली, लखनऊ से पत्रकार, साहित्यकार डॉ रीमा सिन्हा, प्रख्यात कवि,शिक्षक डॉ. आर सी यादव,भोपाल से कवयित्री मेघा राठी एवं समस्त परिवार के सदस्यों एवम गणमान्य व्यक्तियों ने बधाईयाँ प्रदान की ।

मेरी आँखों के आँसू गवाह है
मेरी बेबसी और गुनाहों के
वो गुनाह जो कभी किये ही नहीं
फिर बेबसी भरी सजा किसलिए

प्यार करना ही गर जुल्म था मेरा
फिर सजा अकेले मुझे ही क्यों
सदियों से रीत रही है रुलाने की
झूठ को सच साबित करने की

न जाने कहाँ ले जाएगा ये दौर मुझे
न जाने कब फना होगी रूह तन से
कुरबतों का दौर अब सहन नहीं होता
घुटने लगा है दम अब मजबूरियों से

ख्वाब तो सिर्फ ख्वाब ही रहते हैं
हकीकत में क्यों करें पैमाइश उनकी
शिकायत क्यों करता है ऐ दिल
बेबफाई भी तो अदा है जिंदगी की

वर्षा वार्ष्णेय
अलीगढ़



पर्यावरण बचाने के लिए अंतिम संस्कार का तरीका बदला

पर्यावरण को लेकर दुनिया जागरूक हो रही है। अंतिम संस्कार तक के तरीके बदल रहे हैं। मृत शरीर को जलाने या दफनाने की बजाय पानी में डिकंपोज करने का तरीका निकाला गया है। इसे (एक्वामेशन) कहा जा रहा है। इसके जरिए ग्रीनहाउस गैस एमिशन काफी कम होता है। एक्कामेशन को एल्कलाइन हाइड्रोलाइसिस, रिएक्शन या वाटर क्रिमेशन भी कहा जाता है। ये पानी में अंतिम संस्कार करने का एक तरीका है। इसमें पोटैशियम हाइड्रोऑक्साइड जैसे एल्कलाई के मिश्रण से मिले पानी में पार्थिव शरीर को 3 से 4 घंटे सिलेंडर (मशीन) में रखा जाता है।

पानी को 150 डिग्री सेल्सियस तक गर्म किया जाता है। इसके बाद सिर्फ हड्डियां बचती हैं। इन हड्डियों को ओवन में राख बना दिया जाता है और कलश में रखकर परिवार वालों को सौंप देते हैं। वहीं, इस पानी को सीवेज में मिला दिया जाता है। एक्कामेशन की प्रोसेस के दौरान मृत शरीर को स्टेनलैस स्टील के एक बड़े से रेसोमेटर (मशीन) में रखा जाता है। इसमें मृतक के वजन, जेंडर के आधार पर एल्कलाई डाला जाता है। इसके बाद पानी मिलाते हैं। आमतौर पर मशीन में 95 प्रतिशत पानी और 5 प्रतिशत एल्काई होता है। इसे 150 डिग्री सेल्सियस तक गर्म किया जाता है। कुछ घंटों बाद शरीर का मास खत्म हो जाता है। डीएनए और आरएनए तक नहीं बचता, सिर्फ हड्डियां रह जाती हैं। हड्डियों को साफ पानी से साफ कर दिया जाता है। बाद में इन्हें राख बना दिया जाता है।

बेरोजगारी का आलम तो इस कदर फैला है कि



बढ़ती आबादी की जरूरतें पूरी करने में प्रकृति का नाश हो रहा है। जैव विविधता की हानि, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वनों की कटाई, पानी और भोजन की कमी ये सभी हमारी विशाल और लगातार बढ़ती जनसंख्या के कारण और भी बदतर हो गये हैं।

मनुष्य को समाज में जीवनोपयोगी घटक और बेहतर विकास के लिए आवश्यक संसाधन बेहद जरूरी हैं जो मनुष्य के विकास के साथ देश और मानवजाति के विकास को भी गति प्रदान करते हैं। आधारभूत जरूरत में शुद्ध आक्सीजन, पानी, भोजन की आवश्यकता होती हैं, उसके बाद जीवनयापन के लिए कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य सुविधा, शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय और फिर उसके बाद विलासिता के संसाधन होते हैं। प्रत्येक मनुष्य को खुद का विकास करने का संवैधानिक अधिकार हैं, सभी के लिए कानून समान हैं। हर एक को विकसित होने के लिए समान मौके मिलने ही चाहिए। विश्व में वही देश विकसित हुए हैं, जो सीमित संसाधनों में सीमित आबादी को बेहतर से बेहतर सुविधा दे पायें, क्योंकि उनपर असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दबाव नहीं हैं। दुनिया में बहुत से छोटे–छोटे देश हमसे कई गुना विकसित है, वहां शुद्ध हवा पानी भोजन के साथ रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य की बेहतर सुविधाएं मौजूद हैं। हमारे देश के लाखों विद्यार्थी हर साल ऐसे देशों में उच्च शिक्षा के लिए जाते हैं, वहां बड़े वेतन का रोजगार प्राप्त कर बेहतर जीवनयापन करते हैं।

हमारे देश की आबादी विश्व में सबसे ज्यादा हैं और जितनी ज्यादा आबादी उतनी ज्यादा जरूरतें। जब ये जरूरतें योग्य पद्धति से पूर्ण नहीं होती हैं तो वे जरूरतें नयी समस्याओं को जन्म देते हैं। प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से ग्लोबल वार्मिंग, प्राकृतिक आपदाएं बढ़ रही हैं, अर्थात् सीमित साधनों पर असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति का दबाव बेहतर प्रणाली को भी बिगाड़ देते हैं। इस कारण सामान्य मनुष्य का जीवन जन्म से ही संघर्षमय हो जाता हैं और यह संघर्ष जीवन के अंत तक चलता रहता हैं। बढ़ती आबादी से शुद्ध हवा पानी भोजन की समस्या तेजी से बढ़ती हैं उसके बाद बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा, रोजगार या व्यवसाय के लिए संघर्ष होता हैं जिसके कारण समाज में गरीबी, भुखमरी, बीमारियां, अशिक्षा, बालश्रम, बेरोजगारी, नशा खोरी, भ्रष्टाचार, अपराध, गलिच्छ जीवनमान, मलिन बस्तियां, प्रदूषण, गन्दगी जैसी समस्याओं का जन्म होता हैं। आर्थिक विषमता तेजी से बढ़ती है। मिलावटखोरी, महंगी, धोखाधड़ी जैसी समस्या चरम पर होती हैं, क्योंकि सब अपने फायदे के लिए जो बन पड़े करने को तैयार रहते हैं। इससे लोगों के विचारधारा में नकारात्मकता सतत बढ़ती हैं जो दर्ष्टि प्रवृत्ति को जन्म देती हैं। भारत अब विश्व स्तर पर सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, जबकि मानव विकास सूचकांक में अनुरूप वृद्धि नहीं हुई है। 2021–22 की मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार, भारत 191 देशों में से बंगलादेश और श्रीलंका के बाद 132वें स्थान पर है। भारतीय आबादी के शीर्ष दस प्रतिशत लोगोंके पास 77 प्रतिशत से अधिक संपत्ति है। इस तथ्य के बावजूद कि भोजन की लागत अन्य देशों की तुलना में अपेक्षाकृत कम है, फिर भी भारतकी 70 प्रतिशत से अधिक आबादी 2020 तक स्वास्थ्यवर्धक आहार नहीं खरीद सकती थी। 15–49आयु वर्ग की सभी महिलाओं में, एनीमिया की व्यापकता 2015–16 (एनएफएचएस–४) में 53 प्रतिशत से बढ़कर 2019–21 (एनएफएचएस–5) में 57 प्रतिशत हो गयी है। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2022 में भारत की रैंक 135 है, इसके अनुसार कार्यबल में महिलाएं केवल 22 प्रतिशत हैं। क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग २०२३ के अनुसार बेंगलुरु में भारतीय विज्ञान संस्थान विश्वस्तर पर 155वें रैंक के साथ देश में सर्वोच्च रैंक वाला संस्थान है। स्विट्जरलैंड स्थित वायु गुणवत्ता प्रौद्योगिकी कम्पनी आईक्यू एयर ने हालमें वर्ष 2022 के लिए विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट प्रकाशित की है, इसने बताया कि भारत दुनिया के सबसे प्रदूषित देश के मामले में आठवें स्थानपर है।

2022 की विश्व बैंक की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत ने 2020 (पहला महामारी वर्ष) में वैश्विक वृद्धि में 5.6 करोड़ नये अत्यधिक गरीब (2017 पीपीपीपर प्रति व्यक्ति प्रति दिन . 2.15 का व्यय) जोड़ा है। विश्व बैंक डेटाबेस से पता चलता है कि भारतीय दुनिया के सबसे गरीबों में से एक हैं, इसकी प्रति व्यक्ति आय 2777 वैश्विक औसत 12263 से काफी कम है। केन्द्र सरकार 1 जनवरी, 2023 से पूरे साल एक वर्ष के लिए राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत लगभग 81.35 करोड़ लाभार्थियों को मुफ्त खाद्यान्न प्रदान कर रही है, अर्थात भारत में इतने गरीब जिन्हें मुफ्त राशन की आवश्यकता है। ग्लोबल लिवेबिलिटी इंडेक्स 2022 में भारत की रैंक 112 है। असमानता कम करने की प्रतिबद्धता सूचकांक (सीआरआईआई) 2022 में भारत की रैंक 123 है। लो.कतंत्र रिपोर्ट 2022 में भारत की रैंक 93 है। क्यूएस सर्वश्रेष्ठ छात्र शहर रैंकिंग 2023 में भारत की रैंक 103 है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल द्वारा रिपोर्ट किये गये 2022 भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक के अनुसार भारत 180 देशों में से 85वां सबसे कम भ्रष्ट देश है। वैश्विक पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक 2023 में भारतकी रैंक 180 है। अंतरराष्ट्रीय हथियार हस्तांतरणमें रुझानमें भारतकी रैंक एक है। हालमें जारी 2022 वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआई) रिपोर्ट के अनुसार दुनियाके 111 देशों में लगभग 120 करोड़ लोग गरीबी रेखा से नीचे हैं। उप–सहारा अफ्रीका (लगभग 579 मिलियन) और दक्षिण एशिया (385 मिलियन) का विकासशील क्षेत्र है जहां गरीबों की संख्या सबसे अधिक है। भारत कौशल रिपोर्ट 2022 के अनुसार आधे से भी कम भारतीय रोजगार के योग्य हैं और 75 प्रतिशत कम्पनियों ने कौशल अंतर की सूचना दी है। बढ़ती आबादी की जरूरतें पूरी करने में प्रकृति का नाश हो रहा है। जैव विविधता की हानि, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वनों की कटाई, पानी और भोजन की कमी ये सभी हमारी विशाल और लगातार बढ़ती जनसंख्या के कारण और भी बदतर हो गये हैं। देश में बेरोजगारी का आलम तो इस कदर फैला है कि यदि किसी सरकारी विभाग में सफाईकर्मी या चपरासी के लिए भी एक जगह निकले तो हजारों उच्च शिक्षित स्नातक, इंजीनियर, एमबीए, पीएचडी पदवीधारक भी आवेदन लेकर आ जाते हैं। अनेक विभागोंमें तो सालों साल नयी भर्तियां ही नहीं होती, कर्मचारियों की निवृत्ति चलती रहती हैं तो कई जगह ठेका पद्धति से कर्मचारी लगाये जाते हैं।

सौ बात की एक बात कि देश की आबादी बहुत ज्यादा हैं, युवा वर्ग की संख्या अधिक हैं, जिन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा, रोजगार, व्यवसाय और उच्च जीवनमान बढ़ानेके उचित अवसर मिलने चाहिए जिससे वे सुजान नागरिक बनकर देश और समाज के विकास में अपना यथोचित योगदान दे सकेंगे।

समाज और सोशल मीडिया ने ज्योति मौर्य प्रकरण में पक्षपात किया ..!

पिछले कुछ दिनों से सोशल मीडिया समेत पूरे उत्तर प्रदेश में एक पीसीएस अधिकारी का किस्सा बहुत तेजी से वायरल हो रहा था नाम था ज्योति मौर्य । किस्सा बस इतना है कि एक निम्नवर्गीय कर्मचारी पति ने विवाह के बाद पत्नी को पढ़ाया और पत्नी अधिकारी हो गईं। अब पत्नी को किसी और से प्रेम हो गया और पति के अनुसार वह अपने प्रेमी के सङ्ग मिल कर उसकी हत्या करना चाहती है। पतिदेव रोते फिर रहे हैं। पत्नी और उसके मित्र का वाट्सएप चौट बांटते फिर रहे हैं। पति के दावे में कितनी सच्चाई है यह कानून पता करेगा, पर यदि यह सच है तो बुरा ही है। ऐसी घटनाएं धिक्कार के लायक ही है। पर क्या सचमुच यह एक ऐसी घटना है जिसे महत्व दिया जाय? क्या ऐसी घटनाओं का वायरल होना सही है? आप अपने आस–पड़ोस में नजर दौड़ाइये, आपको दर्जनों ऐसे परिवार मिल जाएंगे जहां पति ने पत्नी को या पत्नी ने पति को अपनी किडनी दी होती है। किडनी देने का मतलब अपनी आधी जिंदगी देना होता है। कहीं पढ़ रहा था, भारत में किडनी लिवर आदि खराब होने की स्थिति में अंगदान सामान्यतः परिवार के ही लोग करते हैं और अस्सी प्रतिशत डोनर



महिलाएं होती हैं। तो यह स्पष्ट है कि किडनी या लिवर खराब होने की स्थिति में आधे से अधिक पुरुषों को नया जन्म उनकी पत्नियां ही देती हैं। और ऐसी स्त्रियों की संख्या सैकड़ों, हजारों में नहीं, बल्कि लाखों में हैं। फिर ऐसे समाज में किसी एक स्त्री–पुरुष या कुछ स्त्रियों–पुरुषों की चरित्रहीनता की खबरें मुद्दा क्यों बनें? यह तो अपवाद ही है, जो कहीं भी हो सकता है।

ऐसे भी असँख्य परिवार हैं जहाँ पत्नी ही नौकरी करती है और पति घरेलू काम या खेती–किसानी करता है। वहाँ प्रेम कम नहीं है, सम्बन्धों में समर्पण की भी कमी नहीं है। हम ऐसे परिवारों को देखते तो हैं पर इनपर चर्चा नहीं करते। हमें लगता है कि इसमें क्या विशेष है, यह तो सामान्य घटना है। और जैसे ही कोई घटना इसके विपरीत दिखती है, हम टूट पड़ते हैं। प्रेम हमें आकर्षित नहीं करता, हमें घृणा आकर्षित करती है, नकारात्मकता आकर्षित करती है, छल आकर्षित करता है। कितना बुरा है न ? वैसे यह भी सच है कि ऐसी नकारात्मक खबरें बहुत कम हैं, बहुत ही कम डेढ़ अरब की जनसंख्या के हिसाब से देखें तो आटे में नमक नहीं, समुद्र में बूंद की तरह पर हम एक उदाहरण मिलते ही चीखने लगते हैं कि समय बदल गया, लोग बुरे हो गए, संस्कार मर गए जबकि ऐसा नहीं है। कम से कम भारत के सम्बंध में तो यह बात भरोसे के साथ कही जा सकती है कि मनुष्य अपने सम्बन्धों में प्रेम का निवेश करता है, छल का नहीं। छल, घृणा, द्वेष, अपवाद है यह सम्बन्धों का स्थायी भाव नहीं । सभ्य समाज का दायित्व होता है कि वह सकारात्मक खबरों का प्रसार करे। नकारात्मक खबरें अंततः कुंठा को ही जन्म देती हैं। इस कुंठा से किसी का भला होने वाला नहीं।

पंकज कुमार मिश्रा
(विश्लेषक)
जौनपुर

भारत की बाढ़ प्रबंधन योजना का क्या हुआ?



राष्ट्रीय बाढ़ आयोग की प्रमुख सिफ़ारिशें जैसे बाढ़ संभावित क्षेत्रों का वैज्ञानिक मूल्यांकन और फ्लड प्लेन ज़ोनिंग एक्ट का अधिनियमन अभी तक अमल में नहीं आया है। सीडब्ल्यूसी का बाढ़ पूर्वानुमान नेटवर्क देश को पर्याप्त रूप से कवर करने के लिए पर्याप्त नहीं है। इसके अलावा, अधिकांश मौजूदा बाढ़ पूर्वानुमान स्टेशन चालू नहीं हैं। 2006 में केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) द्वारा गठित एक टास्क फोर्स ने बाढ़ जोखिम मानचित्रण का कार्य पूरा नहीं किया। बाढ़ क्षति का आकलन पर्याप्त रूप से नहीं किया गया। बाढ़ प्रबंधन कार्यक्रमों के तहत परियोजनाओं के पूरा होने में देरी मुख्य रूप से केंद्र की सहायता की कमी के कारण होती है। बाढ़ प्रबंधन के कार्य एकीकृत तरीके से नहीं किये जाते हैं। भारत के अधिकांश बड़े बांधों में आपदा प्रबंधन योजना नहीं है– देश के कुल बड़े बांधों में से केवल 7 के पास आपातकालीन कार्य योजना/आपदा प्रबंधन योजना है।

चूंकि बाढ़ से हर साल जान–माल को बड़ा नुकसान होता है, इसलिए अब समय आ गया है कि केंद्र और राज्य सरकारें एक दीर्घकालिक योजना तैयार करें जो बाढ़ को नियंत्रित करने के लिए तटबंधों के निर्माण और ड्रेजिंग जैसे टुकड़ों–टुकड़ों के उपायों से आगे बढ़े। इसके अलावा, एक एकीकृत बेसिन प्रबंधन योजना की भी आवश्यकता है जो सभी नदी–बेसिन साझा करने वाले देशों के साथ–साथ भारतीय राज्यों को भी साथ लाए। बाढ़ पर भारत के पहले और आखिरी आयोग के गठन के कम से कम 43 साल बाद, देश में अब तक कोई राष्ट्रीय स्तर का बाढ़ नियंत्रण प्राधिकरण नहीं है। राष्ट्रीय बाढ़ आयोग (आरबीए), या राष्ट्रीय बाढ़ आयोग, की स्थापना 1976 में कृषि और सिंचाई मंत्रालय द्वारा भारत के बाढ़–नियंत्रण उपायों का अध्ययन करने के लिए की गई थी, क्योंकि 1954 के राष्ट्रीय बाढ़ नियंत्रण कार्यक्रम के तहत शुरू की गई परियोजनाएं ज्यादा सफलता हासिल करने में विफल रहीं। .

हाल ही में, उत्तरी राज्यों में बाढ़ ने जीवन और संपत्ति की तबाही मचाई है, जो इस क्षेत्र में एक समस्या है। हालाँकि, बाढ़ केवल उत्तर–पूर्वी भारत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह देश के कई अन्य क्षेत्रों को प्रभावित करती है। मानसून के दौरान लगातार और भारी वर्षा जैसे प्राकृतिक कारकों के अलावा, मानव निर्मित कारक भी हैं जो भारत में बाढ़ में योगदान करते हैं। भारत अत्यधिक असुरक्षित है, क्योंकि इसके अधिकांश भौगोलिक क्षेत्र में वार्षिक बाढ़ का खतरा रहता है। बाढ़ के कारण होने वाली उच्च हानि और क्षति भारत की खराब अनुकूलन और शमन स्थिति और आपदा प्रबंधन और तैयारियों में अपर्याप्तता को दर्शाती है। अतः एक एकीकृत बाढ़ प्रबंधन प्रणाली की आवश्यकता है। 1980 में, राष्ट्रीय बाढ़ आयोग ने 207 सिफारिशें और चार व्यापक टिप्पणियाँ कीं। सबसे पहले, इसने कहा कि भारत में वर्षा में कोई वृद्धि नहीं हुई और इस प्रकार, बाढ़ में वृद्धि मानवजनित कारकों जैसे वनों की कटाई, जल निकासी की भीड़ और बुरी तरह से नियोजित विकास कार्यों के कारण हुई। दूसरा, इसने बाढ़ को नियंत्रित करने के लिए अपनाए गए तरीकों, जैसे तटबंधों और जलाशयों की प्रभावशीलता पर सवाल उठाया और सुझाव दिया कि इन संरचनाओं का निर्माण उनकी प्रभावशीलता का आकलन होने तक रोक दिया जाए। हालाँकि, इसमें यह कहा गया कि जिन क्षेत्रों में वे प्रभावी हैं, वहाँ तटबंधों का निर्माण किया जा सकता है।

तीसरा, इसमें कहा गया कि बाढ़ को नियंत्रित करने के लिए अनुसंधान और नीतिगत पहल करने के लिए राज्यों और केंद्र के बीच समेकित प्रयास होने चाहिए। चौथा, इसने बाढ़ की बदलती प्रकृति से निपटने के लिए एक गतिशील रणनीति की सिफारिश की। रिपोर्ट के विश्लेषण से पता चला कि समस्या देश के बाढ़–ग्रस्त क्षेत्रों के आकलन के तरीकों से शुरू हुई। भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक द्वारा "बाढ़ नियंत्रण और बाढ़ पूर्वानुमान के लिए योजनाएं" 2017 की ऑडिट रिपोर्ट के अनुसार राष्ट्रीय बाढ़ आयोग की प्रमुख सिफ़ारिशें जैसे बाढ़ संभावित क्षेत्रों का वैज्ञानिक मूल्यांकन और फ्लड प्लेन ज़ोनिंग एक्ट का अधिनियमन अभी तक अमल में नहीं आया है। सीडब्ल्यूसी का बाढ़ पूर्वानुमान नेटवर्क देश को पर्याप्त रूप से कवर करने के लिए पर्याप्त नहीं है। इसके अलावा, अधिकांश मौजूदा बाढ़ पूर्वानुमान स्टेशन चालू नहीं हैं। 2006 में केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) द्वारा गठित एक टास्क फोर्स ने बाढ़ जोखिम मानचित्रण का कार्य पूरा नहीं किया। बाढ़ क्षति का आकलन पर्याप्त रूप से नहीं किया गया। बाढ़ प्रबंधन कार्यक्रमों के तहत परियोजनाओं के पूरा होने में देरी मुख्य रूप से केंद्र की सहायता की कमी के कारण होती है। बाढ़ प्रबंधन के कार्य एकीकृत तरीके से नहीं किये जाते हैं। भारत के अधिकांश बड़े बांधों में आपदा प्रबंधन योजना नहीं है– देश के कुल बड़े बांधों में से केवल 7प्रतिश के पास आपातकालीन कार्य योजना/आपदा प्रबंधन योजना है।

नवीनतम तकनीकों की एक विस्तृत श्रृंखला का उपयोग करके बाढ़ की चेतावनियों का प्रसार किया जाना चाहिए। इससे पारंपरिक सिस्टम विफल होने पर वास्तविक समय डेटा देने में मदद मिलेगी। पानी एक ही स्थान पर जमा न हो इसके लिए जल निकासी व्यवस्था का उचित प्रबंधन आवश्यक है। ठोस अपशिष्ट हाइड्रोलिक खुरदरापन बढ़ाता है, रुकावट का कारण बनता है और आम तौर पर प्रवाह क्षमता को कम करता है। पानी के मुक्त प्रवाह की अनुमति देने के लिए इन नालियों को नियमित आधार पर साफ करने की आवश्यकता है। शहरीकरण के कारण, भूजल पुनर्भरण में कमी आई है और वर्षा और परिणामस्वरूप बाढ़ से चरम अपवाह में वृद्धि हुई है। यह चरम अपवाह को कम करने और भूजल स्तर को ऊपर उठाने के दोहरे उद्देश्यों को पूरा करेगा। शहरी जल निकाय जैसे झीलें, टैंक और तालाब भी तूफानी जल के बहाव को कम करके शहरी बाढ़ के प्रबंधन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।



डॉ. सत्यवान सौरभ,

महिला कर्मचारियों को कौशल एवं ज्ञानवृद्धि हेतु प्रशिक्षण तथा विकास के पर्याप्त अवसर मुहैया करवाये





आधुनिक प्रगतिशील दौर में भले ही नर नारी समता की बातें पैठ बनाती प्रतीत हो किन्तु सतही आधार पर स्थिति सर्वथा भिन्न है। यह बात साबित करते हैं वैतनिक समानता के मद्देनजर हुए ताजा सर्वेक्षण इंटरनेशनल लेबर ऑर्गेनाइजेशन रिपोर्ट बताती है कि विश्वभर में किसी कार्य हेतु पुरुष को यदि सौ रुपये मिलते हैं तो महिलाओंको प्रदत्त श्रमदेय 73 रुपये (भारतये 71 रुपये) रहता है। नैसकॉम की रिपोर्ट के अनुसार देश की तकनीकी उद्यमिता में लगभग 30 प्रतिशत महिलाएं सम्मिलित हैं लेकिन उनका औसत वेतन पुरुषों से 29 प्रतिशत कम है।

रिटेलर्स एसोसियेशन ऑफ इंडिया के मुताबित्र रिटेल वर्क फोर्स में महिला सहभागिता 70 प्रतिशत होने के बावजूद उनका वेतन पुरुषों की अपेक्षा 33 प्रतिशत कम है। मासिक आय का यह अंतर कृषि क्षेत्र में 3812 रुपये मैन्युडरिंग में 5904 रुपये, सर्विस सेक्टर में 4435 रुपये तथा ट्रेडिंग 6020 रुपये है।

वर्ल्ड इनइक्वलिटी रिपोर्ट के मुताबिक देश की कुल श्रमिक आय में महिलाओं की हिस्सेदारी मात्र 18 प्रतिशत है, क्योंकि अधिकांश महिलाएं कम आयवाले व्यवसाय से ताल्लुक रखती हैं। इस संदर्भ में भारतीय ग्राम्य भू–भागों का संज्ञान लें तो औसत पुरुष दिहाड़ी 393 रुपये है तथा महिला श्रमदेय 265 रुपये है। शहरी क्षेत्रोंमें यह क्रमशः 483 तथा 333 रुपये है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) के अनुसार सर्वाधिक अंतर केरल राज्यमें दृष्टिगोचर हुआ। यहां गांवों में पुरुषों का औसत पारिश्रमिक 842 रुपये (प्रतिदिन) है तो महिलाओं का 434 रुपये। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल तथा राजस्थान में महिला दिहाड़ी पुरुषों की अपेक्षा लगभग ५ प्रतिशत होने के कारण स्थिति बेहतर आंक सकते हैं। गुजरात, मध्यप्रदेश, झारखंड में यह 80 प्रतिशत तथा उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बंगाल में पुरुषों के मुकाबले 70 प्रतिशत है। उत्तराखंड देश का एकमात्र राज्य है, जहां महिला श्रमदेय पुरुषों के मुकाबले अधिक पाया गया। 19 में से 11 बड़े राज्यों के मध्य स्थित अंतर वर्ष 2011–12 की अपेक्षा और बढ़ा है। पश्चिम बंगाल, गुजरात, छत्तीसगढ़ में यह दस प्रतिशत से अधिक रहा।

मैकेंजी की ताजा रिपोर्टानुसार विश्वभर में महिलाओं की वरिष्ठ पदों पर भागीदारिता मात्र 14 प्रतिशत है, जिसके चलते मानदेय निर्धारित करनेमें 83 प्रतिशत पुरुष की भूमिका प्रभावी हो जाती है। करिअर की अपेक्षा परिवार महिलाओं की प्राथमिकता है। वैतनिक भेद के पीछे यह मानसिकता भी प्रबल रहती है। राष्ट्रीय स्तरपर जांचें तो मुख्य कारण हैं समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मक सोच इसके चलते महिलाओं को नियुक्ति, पदोन्नति, भुगतान आदि में पूर्वाग्रहों का सामना करना पड़ता है, भले ही उनकी योग्यता अनुभव पुरुष सहयोगियों के समकक्ष हो। पारिवारिक जिम्मेदारियों के दृष्टिगत दीर्घकालीन अवकाश, नौकरी के स्वरूप–समय संबंधी पाबंदी, प्रशिक्षण तथा शैक्षणिक कार्यक्रमों के लिए अपेक्षित समय न निकाल पाना, परिवहन उपलब्धता–सुरक्षा के दृष्टिगत समस्याएं पेश आना, मौके अपेक्षाकृत कम होने के कारण ऊंचे वेतनमान के लिए अधिक मोलभाव न कर पाना आदि अनेकानेक कारण इस अंतर को बढ़ावा देते हैं। कानूनी स्थिति देखें तो 1976 में पारित समान पारिश्रमिक अधिनियम सार्वजनिक अथवा निजी सभी संघटनों के नियमित–अनियमित कर्मचारियों को दायरे में लेते हुए, बिना किसी लिंग भेदभाव समान कार्यों के लिए समान वेतन प्राप्त करना सुनिश्चित करता है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 39 (डी) तथा अनुच्छेद 42 इस विषय में समानता की पूर्ण गारंटी देते हैं। वर्ष 2013 में पारित यौन उत्पीड़न (निवारण, प्रतिषेध तथा प्रतिशोध) अधिनियम कार्यस्थल पर महिलाओं की सुरक्षा आवश्यक बनाने सहित वेतनमान समानता भी सुनिश्चित करता है।

सामयिक आवश्यकताके मद्देनजर वर्ष 2017 को संशोधित मातृत्व लाभ अधिनियम के तहत मातृत्व अवकाश की अवधि 12 सप्ताह से बढ़ाकर 26 सप्ताह कर दी गयी। इसी प्रकार वर्ष 2022 में भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने भुगतान समता नीति के अंतर्गत, केंद्रीय रूप से अनुबंधित महिला–पुरुष खिलाड़ियों को समान फीस देने संबंधी घोषणा की। किन्तु महज कानून बनाने भर से इस अंतर को पाटना संभव नहीं है। केन्द्रीय सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा जारी भारत में महिला एवं पुरुष 2022 रिपोर्ट बताती है, विगत एक दशक मेंमहिला–पुरुषों के मध्य वेतन असमानता बढ़ी है उच्च वेतन स्तर पर अंतराल और अधिक बढ़ गया। भेदभाव की गहरी खाई पाटने हेतु समग्र मानसिकता में बदलाव लाना आवश्यक है। समावेशी तथा सुसंचालित राजनीतिक–सामाजिक नीतियां सर्वपक्षीय असमानता दूर करने में निर्णायक योगदान दे सकती हैं। मौजूदा कानूनों में अपेक्षित संशोधन करने के साथ समयानुकूल नवविधान लाना एवं संबद्ध कानूनों को कड़ाईपूर्वक लागू करना समय की मांग है। आवश्यक है कि महिला कर्मचारियों को कौशल एवं ज्ञानवृद्धि हेतु प्रशिक्षण तथा विकास के पर्याप्त अवसर मुहैया करवाये जायं, जो कि करिअर मे आगे बढ़ने तथा बेहतर अवसर पाने में सहायक सिद्ध हो सकें।

आज एकल परिवार और महिलाओं की नौकरी पर जाने से दांपत्य सुख के साथ–साथ पारिवारिक सुख जो होना चाहिए वह नहीं है। बच्चे किसी और पर आश्रित होने के कारण टीवी मोबाइल में घुसे रहते हैं। कामकाजी पति–पत्नी के मामलों में यह बात सामने आ रही है कि दोनों ऑफिस के बाद घर में मोबाइल पर व्यस्त हो जाते हैं। सोशल साइट्स पर चैटिंग करना भी घर टूटने का एक बड़ा कारण बन रहा है। ऐसे मामलों में एक–दूसरे का हस्तक्षेप भी पसंद नहीं आ रहा है। अपने–अपने मोबाइल में घुसे रहते हैं जबकि उन्हें तब दांपत्य सुख के साथ जीना चाहिए। ऐसे में भौतिक सुख सर्वोपरि हो जाता है। माना कि कुछ शादीशुदा महिलाएं अपवाद हो सकती है, पर शादीशुदा औरतों का नौकरी करना उनके परिवार को पूर्ण सुख दे पाता है या नहीं ये आज हमारे समाज की एक ज्वलंत व्यथा है।

दफ्तरों के इर्द–गिर्द खुशियां टटोलते पति–पत्नी

आज की स्थिति ठीक उल्टी है। जब से पुरुष और नारी में बराबरी की बात चल पड़ी है। समान अधिकारों की बात चल पड़ी है। उन्हें शिक्षित करने और फिर शादीशुदा औरतों को भी नौकरी करने की बात चल पड़ी है। तब से बौद्धिक सुख में अपार वृद्धि तो जरूर हुई है किंतु दोनों के बीच का आत्मिक सुख कहीं खो सा गया है।पति–पत्नी दोनों एक–दूजे में खुशी खोजने के बजाय अपने दफ्तरों के इर्द–गिर्द खुशियां टटोलने में लगे रहते हैं। इस तरह जाने–अनजाने खुशियां मिल भी जाती है। किंतु क्या उनका आत्मिक संबंध इतना मजबूत रहता है कि वह परिवार की मर्यादा बनाए रखने के साथ–साथ बच्चों का समुचित और सर्वांगीण विकास कर सके। यहां पर सोचने की बात यह है कि आज अधिकांश बच्चे क्यों बिगड़ रहे हैं? क्यों उनका संतुलित विकास नहीं हो पाता? क्यों वातानुकूलित रूम में बैठे दंपति अपने –अपने टीवी और मोबाइल खोल कर बैठ जाते हैं? और खो जाते हैं रंगीन ख्वाबों की दुनिया में। करीब का दांपत्य सुख क्यों बोरियत लगने लगा है? और क्यों बहुत जल्दी ही तो थकान में बदल जाता है, उनका अपना मधुर दांपत्य संबंध?

क्यों आम जीवन में जी रहे दंपति के अपेक्षा नौकरीपेशा पति–पत्नी अभिमानी और संगीन भावनाओं के शिकार हो जाते हैं? शादीशुदा औरत और नौकरी के संदर्भ में सोचे समझे तो क्या शिक्षित औरतों को नौकरी की तभी जरूरत है जब पुरुष कमा कर उसे खिलाने–पिलाने और परिवार चलाने में असमर्थ साबित हो? ताकि नौकरी कर इससे शिक्षत औरतें घर परिवार को शिक्षित बना सकेगी और सही से अपने बच्चों की देखभाल भी कर सकेगी? या हम ये कहें कि यदि औरतों को इतना शौक है नौकरी करने का तब मर्द को चाहिए कि वह घर संभाले। दोनों के किसी भी एक के अभाव में घर और परिवार एक मकान मात्र रह जाता है या रोटी दाल सब्जी सब कुछ मिल जाता है किंतु संस्कार नहीं मिल पाते।

कामकाजी पति–पत्नी की एक–दूसरे पर निर्भरता खत्म होती जा रही है। दोनों स्वतंत्र होकर फैसले लेते हैं, जिसमें कई बार ईगो भी टकराता है। साथ ही एक–दूसरे के लिए समय नहीं निकाल पाना भी भाग–दौड़ भरी जिंदगी म



अलगाव का एक बहुत बड़ा कारण बन रहा है। अगर दोनों खुलकर बातचीत करेंगे तो उनके अंदर की बातें सामने आएंगी। वास्तव में यह तो सच ही कि अगर स्त्री को अपना परिवार बचाना है तो अपने बच्चों के साथ– साथ सबका ध्यान रखना ही होगा। दाई नौकर के भरोसे बच्चों को छोड़ेंगे तो बच्चा ऐसा नहीं होगा जैसा कि मां के साथ रहकर बनता है। आया एक मां का दिल नहीं ला सकती। इसलिए शादीशुदा औरतों को ऐसे समय नौकरी करने नहीं जाना चाहिए ताकि वह प्यार में बच्चों को बढ़ा करें। ताकि भटकती युवा पीढ़ी इस समाज को नहीं मिले, उनका पति चिंतित काम पर जाए। शाम को प्यारी पत्नी और बच्चों का मुस्कुराता चेहरा देख वह भी प्रसन्न हो।

दोनों साथ मिलकर बच्चों की देखरेख करेंगे तभी एक सुंदर समाज का निर्माण होगा। सपनों का भारत तैयार होगा। नौकरी करने के बाद शादीशुदा महिलाओं में आई अहम की भावना वर्तमान समाज के लिए घातक है। पति–पत्नी दोनों को समय नहीं है न एक दूजे के लिए और न बच्चों को देखने के लिए। ऐसे में आया के भरोसे अपने बच्चों का पालन करते हैं। आया जो खुद के बच्चों को छोड़कर आती है तब दूसरों के बच्चों से कितना प्यार करेगी? यह सोचने वाली बात है। बच्चों की परवरिश ठीक नहीं होने के कारण आज वृद्धाश्रम की संख्या बढ़ रही है। दादा–दादी, नाना–नानी सेबच्चों को बच्चों को प्यार के साथ संस्कार भी मिलेंगे और वृद्धाश्रम की संख्या घटने लगेगी।

आज एकल परिवार और महिलाओं की नौकरी पर जाने से दांपत्य सुख के साथ–साथ पारिवारिक सुख जो होना चाहिए वह नहीं है। बच्चे किसी और पर आश्रित होने के कारण टीवी मोबाइल में घुसे रहते हैं। कामकाजी पति–पत्नी के मामलों में यह बात सामने आ रही है कि दोनों ऑफिस के बाद घर में मोबाइल पर व्यस्त हो जाते हैं। सोशल साइट्स पर चैटिंग करना भी घर टूटने का एक बड़ा कारण बन रहा है। ऐसे मामलों में एक–दूसरे का हस्तक्षेप भी पसंद नहीं आ रहा है। स्वयं पति–पत्नी घरेलू काम या बच्चों पर कोई चर्चा नहीं कर पाते। अपने–अपने मोबाइल में घुसे रहते हैं जबकि उन्हें तब दांपत्य सुख के साथ जीना चाहिए। ऐसे में भौतिक सुख सर्वोपरि हो जाता है। माना कि कुछ शादीशुदा महिलाएं अपवाद हो सकती है, पर शादीशुदा औरतों का नौकरी करना उनके परिवार को पूर्ण सुख दे पाता है या नहीं ये आज हमारे समाज की एक ज्वलंत व्यथा है। पति–पत्नी को एक–दूसरे को समय देना भी जरूरी है। अन्यथा रिश्ता टूटने की कगार पर पहुंच जाता है। पति–पत्नी के बीच ईगो भी एक बड़ा कारण बन रहा है। साथ ही ससुराल पक्ष कामकाजी बहू से अपेक्षाएं भी पूरी रखते हैं, जिससे घर में झगड़े की स्थिति बन रही है। हालांकि, ऐसे मामलों में काउंसलिंग कर पति–पत्नी के बीच की दूरियों को कम किया जा रहा है। इसलिए काम काजी पति–पत्नी एक–दूसरे से बातचीत जारी रखें और दोनों एक–दूसरे के लिए समय जरूर निकालें।

–प्रियंका सौरभ

क्यों पतियों को बीवी 'नो–जॉब' पसंद है ?

इस पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं को घर के अंदर समेटने का तरीका है उन्हें नौकरी न करने देना। पितृसत्ता के गुलाम लोगों को लगता है कि नौकरी करने अगर बहू घर के बाहर जाएगी, उसके हाथ में पैसे होंगे तो वो घर वालों को कुछ समझेगी नहीं। इसके पीछे की भावना होती है कि लड़की इंडिपेंडेंट होगी। वो अपने लिए खुद फैसले लेंगी और इससे उसपर उनका अधिकार कम होगा। लड़कियों और बहुओं को घर की इज्ज़त का नाम देकर घर में उनका जमकर शोषण किया जाता है। कई पुरुषों में यह सोच हावी है कि महिलाएं नौकरी करेंगी तो उनकी मोबिलिटी अधिक होगी, संपर्क अधिक बढ़ेगा। घर से बाहर निकल कर बाहर के पुरुषों से बात करेंगी। यह उन्हें बर्दाश्त नहीं होता है। पुरुषों को लगता है कि नौकरी करने पर महिलाएं उन पर आश्रित नहीं रहेंगी। वो खुद फैसले ले सकेंगी, उनकी चलेगी नहीं। इसलिए वो नौकरीपेशा महिलाओं को नहीं पसंद करते।

पितृसत्तात्मक समाज में औरतों का कमाऊ न होना उनकी मर्जी या पिछड़ेपन की निशानी नहीं बल्कि उनके संस्कारी होने का प्रमाण है। अगर लड़की नौकरी और करियर में आगे बढ़ने की आकांक्षाएं रखती हैं तो उसे शादी का रिश्ता पाने में भी भेदभाव का सामना करना पड़ता है। मर्द जहां शान और शौकत से नौकरी कर अपनी औरत पर धौंस जमाता है, वहीं औरत पूरे दिन घर का काम संभालने के बाद भी उसी मर्द के पैर की जूती समझी जाती है। वह अपनी मर्जी से कहीं आ जा नहीं सकती, अपने हुनर के दम पर कुछ कमा नहीं सकती क्योंकि इस व्यवस्था में औरतों का कमाऊ न होना उनकी मर्जी या पिछड़ेपन की निशानी नहीं बल्कि उनका संस्कारी होना समझा जाता है।

आपने अनेक घरों में अक्सर सुना होगा घर संभालना औरतों का काम है और बाहर से पैसे कमाकर लाना मर्दों का। ये महज एक वाक्य नहीं औरत के लिए बनाई वो चार दिवारी और बेड़ी है, जो उसे उसकी आज़ादी को साथ–साथ ही स्वाभिमान से जीने के हक़ से भी दूर कर देती है। आज के बदलते दौर में भी कई लोगों को बहुएं पढ़ी लिखी तो चाहिए, लेकिन नौकरीपेशा नहीं। एक स्टडी में यह बात सामने आई है कि भारत के लड़कों को शादी के वक़्त नौकरी करने वाली लड़कियों को नापसंद कर घरेलू लड़कियां ज्यादा पसंद हैं। इस तरह देखने को मिलता है कि अगर लड़की नौकरी और करियर में आगे बढ़ने की आकांक्षाएं रखती हैं तो उस शादी का रिश्ता पाने में भी भेदभाव का सामना करना पड़ता है। भारतीय लोगों में शादी के लिए कामकाजी, नौकरीपेशा लड़कियों की मांग बहुत कम हैं। भारतीय महिलाओं में यह बहुत सामान्य है कि महिलाएं अपनी कमाई खर्च करने का फैसला पति के साथ मिलकर लेती हैं। गौरतलब है कि भारत में 99 प्रतिशत महिलाएं 40 की उम्र तक पहुंचने से पहले शादी कर लेती हैं। जब महिलाओं को लगता है की नौकरीपेशा होने पर उन्हें शादी में परेशानी होगी तो वो अपने करियर के प्रति लापरवाह हो जाती हैं। शादी से पहले करियर बनाने या शादी के बाद नौकरी में रहने के विचार को एक तरह से त्याग देती हैं। शादी के बाद लड़की को अपने पति और ससुराल वालों दोनों की सुननी होती है। उस पर हर समय उन्हें खुश रखने का प्रेशर बना रहा है। उस पर न केवल एकदम से बहुत ज्यादा जिम्मेदारियां आ जाती है बल्कि उससे परफेक्ट होने की उम्मीद भी की जाती है। यही एक वजह भी है कि ससुराल वालों की वजह से उसका करियर सेकेंड्री बन जाता है। ऐसे में वह जब तक अपनी वर्क लाइफ और पर्सनल लाइफ में तालमेल बिठा पाती है, तो ठीक वरना उसे अपने काम से हाथ धोना ही पड़ता है।

वैसे आज भी हमारे देश में शादी एक बड़ा मुद्दा है नौकरी नहीं। लड़कियों को पढ़ना–लिखना तक तो ठीक है लेकिन ज्यादातर लोगों को वर्किंग वुमन नहीं चाहिए। कई परिवार पढ़ी लिखी बहू लाना तो चाहते हैं पर वो शादी के बाद उनके नौकरी करने के पक्ष में नहीं होते। तर्क दिया जाता है कि उनका परिवार संपन्न है, नौकरी की क्या ज़रूरत है। ये भी समझा जाता है कि नौकरी करने वाली लड़की को घर संभालने का कम वक़्त मिलेगा, जिससे घर के कामों में दिक्कत आएगी। क्यूंकि भारत के ज़्यादातर हिस्सों में आम धारणा यही है कि घर संभालना महिलाओं का काम है।

पितृसत्ता के गुलाम लोगों को लगता है कि नौकरी करने अगर बहू घर के बाहर जाएगी, उसके हाथ में पैसे होंगे तो वो घर वालों को कुछ समझेगी नहीं। इसके पीछे की भावना होती है कि लड़की इंडिपेंडेंट होगी। वो अपने लिए खुद फैसले लेंगी और इससे उसपर उनका अधिकार कम होगा। लड़कियों और बहुओं को घर की इज्ज़त का नाम देकर घर में उनका जमकर शोषण किया जाता है। कई पुरुषों में यह सोच हावी है कि महिलाएं नौकरी करेंगी तो उनकी मोबिलिटी अधिक होगी, संपर्क अधिक बढ़ेगा। घर से बाहर निकल कर बाहर के पुरुषों से बात करेंगी। यह उन्हें बर्दाश्त नहीं होता है।

पुरुषों को लगता है कि नौकरी करने पर महिलाएं उन पर आश्रित नहीं रहेंगी। वो खुद फैसले ले सकेंगी, उनकी चलेगी नहीं। इसलिए वो नौकरीपेशा महिलाओं को नहीं पसंद करते। कारण कोई भी हो हक़ीकत यही है कि महिलाओं को अब तक पितृसत्ता से आज़ादी नहीं मिल पाई है। सुबह उठते ही उनके दिमाग़ में घंटी बज जाती है, तेज़ी से घड़ी चलने लगती है, ढेर सारे कामों की लिस्ट बन जाती है और वो इधर–उधर दौड़कर रोबोट की तरह झटपट काम निपटाने लगती हैं। इसके चलते उन्हें रोज़ मानसिक और शारीरिक थकान का अनुभव होता है, लेकिन उसके बावजूद उन्हें दूसरों के पैसों पर रोटी तोड़ने वाला करार दे दिया जाता है। कुल मिलाकर देखें तो लड़की को कब क्या करना है? यह उसके अलावा सब तय करते हैं। इस पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं को घर के अंदर समेटने का तरीका है उन्हें नौकरी न करने देना। इसीलिए पतियों को बीवी 'नो–जॉब' पसंद है।

डॉ. सत्यवान सौरभ,

उच्च सदन के उपाध्यक्षों के पैनल का हुआ गठन



नई दिल्ली। राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड ने गुरुवार को उच्च सदन के उपाध्यक्षो के पैनल का पुनर्गठन किया है जिस्म 50 प्रतिशत महिलाओं को स्थान दिया गया।

संसद के मानसून सत्र के पहले दिन सदन की कार्यवाही के दौरान उन्होंने घोषणा किया तथा सदस्यों को सूचित करते हुए कहा कि इस चौनल का पुनर्गठन 17 जुलाई से प्रभावी है। आठ सदस्यों के इस पैनल में पी.टी. उषा (मनोनीत), एस. फान्गनान कोन्याक (भाजपा), फोजिया खान(रा.का.पा.), सुलता देवी (बीजद), वि. विजयरेड्डी (वाईएसआर कांग्रेस), घनश्याम तिवारी(भाजपा), एल. हन. ुमंतय्या (कांग्रेस) और सुखेन्दु शेखर राय (टीएमसी) शामिल हैं।

महिलाओं के साथ दरिंदगी मामले में कोर्ट का एक्शन

चार आरोपियों को 11 दिन की पुलिस कस्टडी





मणिपुर। मणिपुर में महिलाओं की नग्न परेड की घटना मामले में अब तक गिरफ्तार किए गए मुख्य आरोपी समेत चार लोगों को 11 दिन की पुलिस हिरासत में भेज दिया गया है। 4 मई की एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। जिसमें राज्य में दो समुदायों के बीच अशांति के बीच मणिपुर में 2–3 महिलाओं को नग्न घ ुमाया जा रहा है। उनके साथ छेड़छाड़ की जा रही है और कथित तौर पर सामूहिक बलात्कार किया जा रहा है।

इस घटना की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने निंदा की है और कहा है कि यह देश के लोगों के लिए शर्म की बात है। मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने कहा है कि आरोपियों से सख्ती से निपटा जाएगा और वे मौत की सजा पर भी विचार कर रहे हैं।

यह वीडियो, जो बुधवार को सामने आया, कथित तौर पर 4 मई को कांगपोकपी इलाके में एक बैठक के दौरान राज्य में हुए हंगामे के एक दिन बाद शूट किया गया था।

पुरुषों के एक समूह ने दो कुकी–जोमी महिला. ओं का यौन उत्पीड़न जारी रखा, जबकि उन्हें वीडियो में नग्न परेड कराया गया था। थौबल के मैतेई शासित घाटी क्षेत्र में हुई घटना के बाद, सीमावर्ती कांगपोकपी जिले के एक पुलिस मु ख्यालय में एक आपत्ति दर्ज की गई और एक शून्य प्राथमिकी दर्ज की गई। इसके बाद मामला थौबल स्थित पुलिस मुख्यालय को भेजा गया।

आरोपी का घर फूंका

मणिपुर में भीड़ द्वारा दो महिलाओं को नग्न घ ुमाए जाने के वीडियो के दो दिन बाद, स्थानीय लोगों ने वायरल वीडियो में देखे गए कथित आरोपियों में से एक ह्यूरिम हेरादास सिंह के घर में आग लगा दी।

20 जुलाई को इंफाल में महिलाओं ने मणिपुर वायरल वीडियो मामले के एक आरोपी का घर जला दिया। मामले में अब तक चार गिरफ्तारियां हो चुकी हैं।

यह घटना पूर्वोत्तर राज्य में 3 मई को जातीय हिंसा भड़कने के एक दिन बाद कांगपोकपी जिले के एक गांव में हुई। दूसरी ओर, भयावह फुटेज बुधवार को सामने आया और इंटरनेट प्रतिबंध हटने के बाद वायरल हो गया।

बहन के प्रेम प्रसंग से बौखलाया भाई

सिर को किया धड़ से अलग! कटी हुई लड़की की खोपड़ी लेकर पहुंचा थाने

बाराबंकी। उत्तर प्रदेश में फतेहपुर जिले के बाराबंकी में एक भाई को अपनी बहन की हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। भाई की पहचान मोहम्मद के रूप में हुई। रियाज ने कथित तौर पर अपनी बहन का सिर उस लिए काट दिया क्योंकि उसका किसी लड़के के साथ प्रेम प्रसंग चल रहा था।

उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले के फतेहपुर थाना क्षेत्र के एक गांव में अपनी बहन के प्रेम प्रसंग से नाराज एक युवक ने धारदार हथियार से उसका सिर धड़ से अलग कर उसकी हत्या कर दी। बहन का सिर लेकर थाने जाते समय आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने इसकी जानकारी दी।

भाई ने किया बहन का सिर तन से जुदा

उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले के फतेहपुर थाना क्षेत्र के एक गांव में अपनी बहन के प्रेम प्रसंग से नाराज एक युवक ने धारदार हथियार से उसका सिर ध ड़ से अलग कर उसकी हत्या कर दी। बहन का सिर लेकर थाने जाते समय आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने इसकी जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि थाना फतेहपुर क्षेत्र के ग्राम मिठवारा निवासी रियाज (22) ने अपनी सगी बहन आशिफा (18) का सिर धारदार हथियार से वार कर धड़ से अलग कर दिया।

चांद बाबू के साथ घर से पहले भाग चुकी आशिफा

अपर पुलिस अधीक्षक (एएसपी) आशुतोष मिश्रा ने बताया कि पुलिस ने आरोपी रियाज को गिरफ्तार कर लिया है। उन्होंने बताया कि आरोपी की बहन आशिफा का कथित तौर पर गांव के ही एक युवक चांद बाबू के साथ प्रेम प्रसंग चल रहा था जिससे नाराज होकर उसने अपनी बहन की धारदार हथियार से सिर काटकर हत्या कर दी। पुलिस के अनुसार आशिफा को कुछ दिनों पहले चांद बाबू अपने साथ भगाकर ले गया था, हालांकि बाद में पुलिस ने आशिफा को बरामद कर लिया तथा उसके परिजनों की तहरीर पर चांद बाबू के खिलाफ मामला दर्ज कर उसे जेल भेज दिया था। ग्रामीणों ने बताया कि रियाज अपनी बहन और चांद बाबू के संबंधों से नाराज था और इस कारण दोनों के बीच कहासुनी हुआ करती थी। उन्होंने बताया कि आज भी दोनों के बीच इसी बात को लेकर कहासुनी हुई और गुस्से में आकर रियाज ने धारदार हथियार से आशिफा का सिर काटकर बेरहमी से हत्या कर दी।

बहन का कटा हुआ सिर लेकर थाने पहुंचा भाई

पुलिस ने बताया कि बहन की हत्या करने के बाद रियाज उसका सिर लेकर घर से थाने की तरफ निकल पड़ा और काफी देर तक पैदल ही चलता रहा, सूचना मिलते ही पुलिस ने उसे रास्ते से कटे सिर के साथ गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के उच्च अधिकारी मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल में लगे हुए है। एएसपी ने कहा कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है और आरोपी भाई को गिरफ्तार कर विधिक कार्रवाई की जा रही है।

सीमा हैदर का मामला राष्ट्रपति भवन तक पहुंचा

सचिन के पिता ने भारतीय नागरिकता की मांग की



सीमा हैदर के मामले में ताजा घटनाक्रम में उसके प्रेमी सचिन मीना के पिता अब राष्ट्रपति भवन पहुंचेंगे और उसके लिए भारतीय नागरिकता की मांग करेंगे। खबर है कि सीमा के बॉयफ्रेंड सचिन के पिता अपने वकील के साथ राष्ट्रपति भवन के लिए रवाना हो हुए है।



सीमा हैदर के मामले में ताजा घटनाक्रम में उसके प्रेमी सचिन मीना के पिता अब राष्ट्रपति भवन पहुंचेंगे और उसके लिए भारतीय नागरिकता की मांग करेंगे। खबर है कि सीमा के बॉयफ्रेंड सचिन के पिता अपने वकील के साथ राष्ट्रपति भवन के लिए रवाना हो हुए है। सीमा हैदर ने सचिन मीना से अपने कथित प्रेम के कारण पाकिस्तान से अवैध रूप से भारत में प्रवेश किया।

सीमा हैदर (30) और सचिन मीना (22) को सबसे पहले स्थानीय पुलिस ने 4 जुलाई को ग्रेटर नोएडा से गिरफ्तार किया था, लेकिन 7 जुलाई को एक अदालत ने उन्हें जमानत दे दी। सीमा मई में अपने चार बच्चों के साथ नेपाल के रास्ते भारत में दाखिल हुई थी। इस साल की शुरुआत में नेपाल में शादी करने का दावा करने वाला यह जोड़ा पहली बार 2019 में ऑनलाइन गेम च्न्ठळ के जरिए संपर्क में आया था। इस बीच, उत्तर प्रदेश पुलिस आतंकवाद निरोधी दस्ता (एटीएस) के साथ सीमा हैदर से अभी भी पूछताछ कर रही है। विदेश मंत्रालय ने गुरुवार को कहा कि पाकिस्तानी नागरिक सीमा हैदर से जुड़े मामले की जांच जारी है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने भी संवाददाताओं से कहा, श्हमें इस मामले की जानकारी है। वह कोर्ट में पेश हुईं और उन्हें (सीमा हैदर) कोर्ट से जमानत मिल गई है और वह जमानत पर बाहर हैं। इस मामले में जांच चल रही है। यह न्यायिक मामला है और जांच जारी है, इसलिए मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं कहना। वहीं सीमा ने कहा है कि वह पाकिस्तान वापस नहीं जाना चाहती और अपने भारतीय प्रेमी सचिन मीणा के साथ रहना चाहती है।

केंद्रीय जांच एजेंसियों ने पाकिस्तानी नागरिक सीमा हैदर के भारत में अवैध प्रवेश के मामले की जांच के सिलसिले में बृहस्पतिवार को नोएडा पुलिस के साथ बैठक की। आधिकारिक सूत्रों ने यह जानकारी दी। यह बैठक उत्तर प्रदेश पुलिस के आतंकवाद निरोधी दस्ते द्वारा सोमवार और मंगलवार को सीमा और उसके भारतीय साथी सचिन मीना से पूछताछ के मद्देनजर हुई है। एक आधिकारिक सूत्र ने बताया, ''सीमा हैदर मामले की जांच के सिलसिले में केंद्रीय जांच एजेंसियों के अधिकारियों ने बृहस्पतिवार की सुबह नोएडा पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात की।'' जहां उत्तर प्रदेश आतंकवाद निरोधक दस्ते ने जहां युगल से दो दिनों तक पूछताछ की है, वहीं नोएडा पुलिस अलग से इस मामले की जांच कर रही है। नोएडा पुलिस ने अभी आरोप पत्र दाखिल नहीं किया है। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, ''अब तक की जांच के अलावा, पुलिस यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि सीमा के वास्ते फर्जी आधार कार्ड बनवाने के लिए सचिन ने कौन से पहचान पत्र जमा किए थे।''

अधिकारी ने कहा, ''पुलिस जांच चल रही है, और जांच प्रक्रिया पूरी होने तथा सबूत एकत्र होने के बाद मामले में आरोप पत्र दायर किया जाएगा।'' पाकिस्तान के सिंध प्रांत की रहने वाली सीमा हैदर 13 मई को बस से नेपाल के रास्ते अपने चार बच्चों के साथ अवैध रूप से भारत में दाखिल हुई थी। उसका कहना है कि वह अपने भारतीय प्रेमी सचिन मीणा के साथ रहने आई थी, जो ग्रेटर नोएडा के रबूपुरा इलाके में रहता है। स्थानीय पुलिस ने चार जुलाई को सीमा को अवैध रूप से भारत में प्रवेश करने के आरोप में गिरफ्तार किया था और सचिन को अवैध प्रवासियों को शरण देने के लिए गिरफ्तार किया गया था। हालांकि, उन दोनों को सात जुलाई को एक स्थानीय अदालत ने जमानत दे दी थी और वे अपने चार बच्चों के साथ रबूपुरा इलाके के एक घर में रह रहे हैं।

सीमा ने यह भी कहा है कि वह पाकिस्तान वापस नहीं जाना चाहती और सचिन के साथ रहना चाहती है। उसने यह भी दावा किया कि वह हिंदू बन गई है। इस सप्ताह एक मीडिया रिपोर्ट में दावा किया गया है कि पाकिस्तान की खुफिया एजेंसियों ने देश की सरकार को सूचित किया है कि ''प्यार'' ही वह ''एकमात्र'' कारक है जिसके कारण चार बच्चों की मां एक हिंदू व्यक्ति के साथ रहने के लिए भारत में दाखिल हुई। युवक से उसकी दोस्ती एक ऑनलाइन गेम प्लेटफॉर्म के माध्यम से हुई थी।

लैला मजनूं की तरह है सीमा–सचिन की कहानी

गोली भेजने वाले पाक से पहली बार आई है डोली



पाकिस्तानी महिला सीमा हैदर का मामला गर्माता जा रहा है। जांच एजेंसियां उससे कई दौर की पूछताछ कर चुकी हैं लेकिन अब तक उसके पाकिस्तानी जासूस होने के कोई सुबूत नहीं मिले हैं। उसने भारत में अपने प्रेमी सचिन मीणा से शादी कर ली है और हिंदू धर्म भी अपना लिया है। यही नहीं, ग्रेटर नोएडा के रबूपुरा में रहने वाले आस–पड़ोस के लोगों को भी सीमा के यहां रहने से कोई दिक्कत नहीं है लेकिन कुछ संगठनों की मांग है कि सीमा को वापस भेजा जाना चाहिए।

इस बीच, निर्भया मामले में दोषियों के वकील रहे एपी सिंह ने खुद को सीमा का वकील बताते हुए उसे भारतीय नागरिकता दिये जाने के लिए अर्जी दायर करने की बात कही है। वह राष्ट्रपति को सीमा की ओर से एक दया याचिका भी सौंपेंगे जिसमें मांग की गयी है कि उसे भारत में ही रहने दिया जाये और अवैध रूप से भारत में प्रवेश करने के लिए उसे क्षमादान दिया जाये। वकील एपी सिंह का कहना है कि पहले सीमा पार से गोली आती थी लेकिन पहली बार डोली आई है तो उसका स्वागत करना चाहिए। उनका यह भी कहना है कि लैला मजनू की कहानी भी यहीं हुई थी और सीमा और सचिन के प्रेम की कहानी भी यहीं शुरू हुई है जिसका सम्मान किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि सीमा की सभी जांच कराई जानी चाहिए और यदि कोई सुबूत नहीं मिलता है तो उसे भारत में ही रहने देना चाहिए।

दूसरी ओर, हाल ही में एक हिंदूवादी संगठन ने सचिन के घर के बाहर प्रदर्शन कर सीमा को वापस भेजने की मांग की थी। कुछ हिंदू संगठनों का यह भी कहना है कि जबसे सीमा यहां आई है तबसे पाकिस्तान में हिंदुओं पर अत्याचार बढ़ गये हैं इसलिए उसे वापस भेजना चाहिए। इस बीच, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत रविंद्रपुरी ने कहा है कि सचिन को सीमा का बसा बसाया घर नहीं उजाड़ना चाहिए। उन्होंने कहा है कि इस तरह शादीशुदा और बच्चों वाली महिला को प्रेम जाल में फंसा कर शादी करना ठीक नहीं है।

उन्होंने कहा कि यह सनातन की परम्परा नहीं है। दूसरी ओर, सीमा हैदर का कहना है कि वह पाकिस्तान नहीं जायेगी क्योंकि वहां बुरी से बुरी मौत उसका इंतजार कर रही है। सीमा का कहना है कि वह भारत में ही रहेगी और अब सचिन के घर से उसकी अर्थी ही जायेगी। सीमा का यह भी कहना है कि वह जांच एजेंसियों को सबकुछ सच सच बता चुकी है और उसके पास छिपाने के लिए कुछ भी नहीं है।



राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने गत शनिवार को राजभवन में भारतीय भाषा और संस्कृति संगम के प्रतिनिधिमंडल भेंट के दौरान वीणा समूह जयपुर द्व ारा विवाह गीत पर तीन भाषाओं (राजस्थानी, हिंदी और अंग्रेजी) में प्रकाशित कॉफी टेबल पुस्तक का अवलोकन किया।

प्रधानमंत्री ने किये दो समझौतों पर हस्ताक्षर



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी फ्रांस यात्रा के दौरान गत शनिवार को आबू धाबी पहुंचे इस दौरान भारतीय रिजर्व बैंक और सेंट्रल बैंक यूएई ने आर्थिक सहयोग और सीमा पार लेनदेन को बढ़ावा देने के लिए दो समझौतों और ज्ञापनो पर हस्ताक्षर किए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जैद अलद नह्यान की उपस्थिति में समझौता ज्ञापन का आदान प्रदान किया गया जिसका उद्देश्य स्थानीय मुद्रा के उपयोग को बढ़ावा देना और भुगतान तथा संदेश प्रणालियों को आपस में जोड़ने की सुविधा प्रदान करना है। पहला समझौता ज्ञापन सीमा पर लेनदेन के लिए स्थानीय मुद्राओं(रुपये और दिरहम) के प्रयोग को बढ़ावा देने पर केंद्रित है स्थानीय मुद्रा निपटान प्रणाली से निर्यातकों आयातको को अपनी संबंधित घरेलू मुद्रा में चलाना जानते को मदद मिलेगी इससे दोनों देशों की मुद्राओं को बढ़ावा मिलेगा।

...जब देशद्रोह के मुकदमे में मंडेला को निर्दोष पाया



सरकार के दमन चक्र से बचने के लिए नेल्सन और ऑलिवर ने एक एम प्लान बनाया। एम का मतलब मंड. `ला से था। निर्णय लिया गया कि कांग्रेस को टुकडों में तोडकर काम किया जाए तथा परिस्थिती अनुसार भूमिगत रहकर काम किया जाए। प्रतिबंध के बावजूद नेल्सन क्लिपटाउन चले गये और वहाँ कांग्रेस के जलसों में भाग लेने लगे। उन्होने वहाँ उन सभी संगठनों के साथ काम किया जो अश्वेतों की स्वतंत्रता के लिये संघर्ष कर रहे थे। सरकार के दमन चक्र के कारण नेल्सन का जनाधार बढ रहा था। रंगभेद सरकार आंदोलन तोड्ने का हर संभव प्रयास कर रही थी। पे बीच कुछ ऐसे कानून पास किये गये जो अश्वेतों के हित में नहीं थे। नेल्सन ने इन कानूनों का विरोध किया। विरोध प्रर्दशन के दौरान ही 'शार्पविले' शहर में पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर गोलियों की बौछार कर दी। लगभग 180 लोग मारे गये। सरकार के इस क्रूर दमन चक्र से नेल्सन का अहिंसा पर से विश्वास उठ गया। अत्यचारों की पराकाष्ठा को देखते हुए एएनसी ने हथियार बंद लडाई लड्ने का फैसला लिया।

मंडेला का जन्म 18 जुलाई 1918 को म्वेजो, ईस्टर्न केप, दक्षिण अफरीका संघ में गेडला हेनरी म्फाकेनिस्वा और उनकी तीसरी पत्नी नेक्यूफी नोसकेनी के यहाँ हुआ था। वे अपनी माँ नोसकेनी की प्रथम और पिता की सभी संतानों में 13 भाइयों में तीसरे थे। मंडेला के पिता हेनरी म्वेजो कस्बे के जनजातीय सरदार थे। स्थानीय भाषा में सरदार के बेटे को मंडेला कहते थे, जिससे उन्हें अपना उपनाम मिला। उनके पिता ने इन्हें 'रोलिह्लाला' प्रथम नाम दिया था जिसका खोजा में अर्थ ष्उपद्रवीष होता है। उनकी माता मेथोडिस्ट थी। मंडेला ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा क्लार्कबेरी मिशनरी स्कूल से पूरी की। उसके बाद की स्कूली शिक्षा मेथोडिस्ट मिशनरी स्कूल से ली। मंडेला जब 12 वर्ष के थे तभी उनके पिता की मृत्यु हो गयी। मंडेला के तीन शादियाँ कीं जिन से उनकी छह संतानें हुई। उनके परिवार में 17 पोते–पोती थे। अक्टूबर 1944 को उन्होंने अपने मित्र व सहयोगी वॉल्टर सिसुलू की बहन इवलिन मेस से शादी की। 1961 में मंडेला पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया गया परन्तु उन्हें अदालत ने निर्दोष पाया। इसी मुकदमे के दौरान उनकी मुलाकात अपनी दूसरी पत्नी नोमजामो विनी मेडीकिजाला से हुई। 1998 में अपने 80वें जन्मदिन पर उन्होंने ग्रेस मेकल से विवाह किया। नेल्सन ने 1952 में कानूनी लडाई लड्ने के लिए एक कानूनी फर्म की स्थापना की। नेल्सन की बढती लोकप्रियता के कारण उन पर प्रतिबंध लगा दिया गया। वर्गभेद के आरोप में उन्हे जोहान्सबर्ग के बाहर भेज दिया गया। उन पर प्रतिबंध लगा दिया गया कि वे किसी भी बैठक में भाग नही ले सकते। सरकार के दमन चक्र से बचने के लिए नेल्सन और ऑलिवर ने एक एम प्लान बनाया। एम का मतलब मंडेला से था। निर्णय लिया गया कि कांग्रेस को टुकडों में तोडकर काम किया जाए तथा परिस्थिती अनुसार भूमिगत रहकर काम किया जाए। प्रतिबंध के बावजूद नेल्सन क्लिपटाउन चले गये और वहाँ कांग्रेस के जलसों में भाग लेने लगे। उन्होने वहाँ उन सभी संग. ठनों के साथ काम किया जो अश्वेतों की स्वतंत्रता के लिये संघर्ष कर रहे थे।

सरकार के दमन चक्र के कारण नेल्सन का जनाधार बढ रहा था। रंगभेद सरकार आंदोलन तोड्ने का हर संभव प्रयास कर रही थी। पे बीच कुछ ऐसे कानून पास किये गये जो अश्वेतों के हित में नहीं थे। नेल्सन ने इन कानूनों का विरोध किया। विरोध प्रर्दशन के दौरान ही 'शार्पविले' शहर में पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर गोलियों की बौछार कर दी। लगभग 180 लोग मारे गये। सरकार के इस क्रूर दमन चक्र से नेल्सन का अहिंसा पर से विश्वास उठ गया। अत्याचारों की पराकाष्ठा को देखते हुए एएनसी ने हथियार बंद लडाई लड्ने का फैसला लिया। एएनसी के लड़ाके दल का नाम 'स्पियर ऑफ द नेशन' रखा गया तथा नेल्सन को इसका अध्यक्ष बनाया गया। सरकार इस संगठन को खत्म करके नेल्सन को गिरफ्तार करना चाहती थी। जिससे बचने के लिए नेल्सन देश के बाहर चले गये और 'अदीस अबाबा' में अपने आधारभूत अधिकारों की मांग करने लगे। उसके बाद अल्जीरीया गये जहाँ गोरिल्ला तकनीक का प्रशिक्षण लिया । इसके बाद मंडेला लंदन चले गये जहाँ उनकी मुलाकात फिर से 'ऑलिवर टॉम्बो' से हुई। लंदन में विपक्षी दलों के साथ मिलकर उन्होने पूरी दुनिया को अपनी बात समझाने का प्रयास किया।

1943 में वो पहले अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस के कार्यकर्ता के रूप में शामिल हुए उसके बाद ।छब् यूथ लीग के संस्थापक बने थे। 1944 में उन्होंने एवलिस मेस नामक महिला से विवाह कर लिया और तीन संतानों का जन्म हुआ लेकिन 1957 में उनका तलाक हो गया था द्य इसके बाद छमसेवद डंदकमसं ने वक. ालत पास की और अपने साथी ओलीवर टोम्बो के साथ जोहान्सबर्ग में वकालत करने लगे। उन दोनों ने मिलकर रंगभेद के खिलाफ आवाज उठायी थी। इसी कारण 1956 में उनके साथ 155 कार्यकर्ताओ पर मुक. दमा लगाया गया जिसे चार साल बाद खत्म कर दिया गया। 1958 में उन्होंने माडीकिजेला नामक महिला से दूसरा विवाह किया जिसने नेल्सन मंडेला को जेल से छुडवाने में अहम भूमिका अदा की थी। 1960 में ANC पर प्रतिबन्ध लग गया जिसके कारण नेल्सन मंडेला को भूमिगत होना पड़ा था द्य अब उन्होंने देश की अर्थव्यवस्था के लिए एक अभियान चलाया द्य इस कारण उन पर हिंसक कारवाई का आरोप लगाया गया और उन्हें बंदी बना लिया गया द्य अब उन्होंने स्वय के बचाव में प्रजातंत्र ,स्वतंत्रता और समानता के विषय में विचार व्यक्त किये द्य 1964 में उन्हें आजन्म कारावास की सजा सुनाई गयी। दक्षिण अफ्रीका के लोग मंडेला को व्यापक रूप से "राष्ट्रपिता" मानते थे. उन्हें "लो. कतन्त्र के प्रथम संस्थापक","राष्ट्रीय मुक्तिदाता और उद्धारकर्ता" के रूप में देखा जाता था. 2004 में जोहनसबर्ग में स्थित सैंडटन स्क्वायर शॉपिंग सेंटर में मंडेला की मूर्ति स्थापित की गयी और सेंटर का नाम बदलकर नेल्सन मंडेला स्क्वायर रख दिया गया. दक्षिण अफ्रीका में प्रायः उन्हें मदी बाकह कर बुलाया जाता है जो बुजुर्गों के लिये एक सम्मान–सूचक शब्द है.

नवम्बर 2009 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने रंगभेद विरोधी संघर्ष में उनके योगदान के सम्मान में उनके जन्मदिन (18 जुलाई) को 'मंडेला दिवस' घोषित किया। 67 साल तक मंडेला के इस आन्दोलन से जुड़े होने के उपलक्ष्य में लोगों से दिन के 24 घण्टों में से 67 मिनट दूसरों की मदद करने में दान देने का आग्रह किया गया. मंडेला को विश्व के विभिन्न देशों और संस्थाओं द्वारा 250 से भी अधिक सम्मान और पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। 5 अगस्त 1962 को उन्हें मजदूरों को हड़ताल के लिये उकसाने और बिना अनुमति देश छोड़ने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर मुकदमा चला और 12 जुलाई 1964 को उन्हें उम्रकैद की सजा सुनायी गयी. सजा के लिये उन्हें रॉबेन द्वीप की जेल में भेजा गया किन्तु सजा से भी उनका उत्साह कम नहीं हुआ। उन्होंने जेल में भी अश्वेत कैदियों को लामबन्द करना शुरू कर दिया था। जीवन के 27 वर्ष कारागार में बिताने के बाद अन्ततः 11 फरवरी 1990 को उनकी रिहाई हुई। रिहाई के बाद समझौते और शान्ति की नीति द्वारा उन्होंने एक लोकतान्त्रिक एवं बहुजातीय अफ्रीका की नींव रखी। 1990 में श्वेत सरकार से हुए एक समझौते के बाद उन्होंने नये दक्षिण अफ्रीका का निर्माण किया। वे दक्षिण अफ्रीका एवं समूचे विश्व में रंगभेद का विरोध करने के प्रतीक बन गये। संयुक्त राष्ट्रसंघ ने उनके जन्म दिन को नेल्सन मंडेला अन्तर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। 1990 में भारत ने उन्हे देश के सर्वोच्च पुरस्कार भारत रत्न से सम्मानित किया। मंडेला, भारत रत्न पाने वाले पहले विदेशी हैं।10 मई 1994 को मंडेला अपने देश के सर्वप्रथम अश्वेत राष्ट्रपति बने। नवम्बर 2009 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने रंगभेद विरोधी संघर्ष में उनके योगदान के सम्मान में उनके जन्मदिन (18 जुलाई) को 'मंडेला दिवस' घोषित किया।

गुमनामी



नामचीन अस्तियों में ना खोजना मेरी शख्सियत को
मुझे मंजिल से नहीं सफर से इश्क हो गया.
रुक के टहर ना अब रास आता नहीं,
चलते –चलते खुद को खोना,
मेरे जीने का अब फलसफा हो गया.
ना दौलत की आस है,
न शोहरत की चाह रही,
मै तो गुमनामी की फकीरी का अब बादशाह जो हो गया
झूटी भीड़ की महफिलो में दम सा टूट ने लगा है,
तन्हाईयों की शोबत में
साँसें लेने का मैं आदी जो हो गया
मै तो गुमनामी की फकीरी का अब बादशाह जो हो गया

.नीतू यादव
जयपुर(राजस्थान)

'नीरज' की अनुभूति का आधार प्राचीन भारतीय परंपरा



गोपालदास नीरज हिन्दी साहित्यकार, शिक्षक एवं कवि सम्मेलनों के मंचों पर काव्य वाचक एवं फ़िल्मों के गीत लेखक हैं। वे पहले व्यक्ति हैं जिन्हें शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में भारत सरकार ने दो–दो बार सम्मा. नित किया, पहले पद्म श्री से, उसके बाद पद्म भूषण से। यही नहीं, फ़िल्मों में सर्वश्रेष्ठ गीत लेखन के लिये उन्हें लगातार तीन बार फिल्म फेयर पुरस्कार भी मिला।

हिंदी साहित्य के जाने माने कवियों में से हैं। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के इटावा जिला के गाँव पुरावली में हुआ। उनकी काव्य पुस्तकों में दर्द दिया है, आसावरी, बादलों से सलाम लेता हूँ, गीत जो गाए नहीं, नीरज की पाती, नीरज दोहावली, गीत–अगीत, कारवां गुजर गया, पुष्प पारिजात के, काव्यांजलि, नीरज संचयन, नीरज के संग–कविता के सात रंग, बादर बरस गयो, मुक्तकी, दो गीत, नदी किनारे, लहर पुकारे, प्राण–गीत, फिर दीप जलेगा, तुम्हारे लिये, वंशीवट सूना है और नीरज की गीतिकाएँ शामिल हैं।

गोपाल दास नीरज ने कई प्रसिद्ध फ़िल्मों के गीतों की रचना भी की है। नीरज के गीत चाहे रेडियो पर सुने या फिर उनके मुख से किसी मंच से, दिल को पुर सुकून देते हैं। आज आप जिस बहुचर्चित गीतकार कवि को जर्जर हालत में देख रहे हैं, किसी समय उनकी माली हालत भी इसी काया की तरह थी। अपनी गरीबी को उन्होंने कभी किसी मंच से साझा नहीं किया। यह बात मुझे यदि मेरे स्वर्गीय पिता नहीं बतलाते तो दुनिया यह जान ही नहीं पाती कि डॉ. गोपालदास नीरज ने अपना बचपन किन मुश्किल हालातों में गुजारा था। यह बात कई साल पहले दिल्ली से इंदौर के सफर की है। पिताजी प्रथम श्रेणी के डिब्बे में थे और सामने वाली सीट पर आकर एक व्यक्ति बैठता है। कुछ देर में बातचीत का दौर शुरु होता है। यह व्यक्ति अपना परिचय देता है –मुझे लोग गोपालदास नीरज कहते हैं... पिता रोमांचित हो गए और फौरन अपने झोले में से उनका कविता संग्रह 'कारवां गुजर गया, गुबार देखते रहे..' निकालकर यह बताया कि मैं भी आपका बहुत बड़ा फैन हूं। नीरज इंदौर में एक कवि सम्मेलन के सिलसिले में आ रहे थे, जो गांधी हॉल में था। सफर में उनसे पिताजी की काफी बातें हुई और तब नीरज ने अपने परिवार के बारे में जो कुछ भी बताया, वह हैरान कर देने वाला था। नीरज ने कहा कि गंगा किनारे हमारा घर हुआ करता था और घर में बेहद गरीबी थी। जो लोग गंगा नदी में 5 पैसे, 10 पैसे फेंकते थे, हम बच्चे गोता लगाकर उन्हें निकालकर इकठ्ठा करते थे और इसी जमा पूंजी से घर का चूल्हा जलता था।

'नीरज' की लोकप्रियता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि वह जहाँ हिन्दी के माध्यम से साधारण स्तर के पाठक के मन की गहराई में उतरे हैं वहाँ उन्होंने गम्भीर से गम्भीर अध्येताओं के मन को भी गुदगुदा दिया है।

शैली– दार्शनिक शैली में वह प्रतीक प्रधान व्यंजना के द्वारा सीधे–सादे ढंग से अपनी बात कहते चलते है। उसकी रचनाएँ संगीत, अलंकार और विशेषणों आदि विहीन सीधी–सादी होती हैं।

लोकगीतात्मक शैली में प्रायः फक्कड़पन रहता है, और ऐसी रचनाओं में वह प्रायः ह्रस्व–ध्वनि प्रधान शब्द ही प्रयुक्त करते हैं। उनकी लोकगीत–प्रधान शैली से लिखी गई रचनाओं में माधुर्य भाव की प्रचुरता देखने को मिलती है। चित्रात्मक शैली में लिखी गई रचनाओं में वह शब्दों द्वारा चित्र–निर्माण करने की ही रचनाएँ हैं, जो ओज, तारुण्य और बलिदान का संदेश देने के लिए लिखी गई हैं। ओज लाने के लिए कठोर शब्दों का प्रयोग नितांत वांछनीय है। ऐसी रचनाओं में 'नीरज' ने जीवन के नि. टकतम प्रतीकों का प्रयोग ही बहुलता से किया है। संस्कृतनिष्ठ शैली वाली रचनाओं में 'नीरज' की अनुभूति का आधार प्राचीन भारतीय परंपरा रही है।

लोकप्रियता– 'नीरज' की लोकप्रियता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि वह जहाँ हिन्दी के माध्यम से साधारण स्तर के पाठक के मन की गहराई में उतरे हैं वहाँ उन्होंने गम्भीर से गम्भीर अध्येताओं के मन को भी गुदगुदा दिया है। इसीलिए उनकी अनेक कविताओं के अनुवाद गुजराती, मराठी, बंगाली, पंजाबी, रूसी आदि भाषाओं में हुए हैं। यही कारण है कि 'भदन्त आनन्द कौसल्यायन' यदि उन्हें हिन्दी का 'अश्वघोष' घोषित करते हैं, तो 'दिनकर' जी उन्हें हिन्दी की 'वीणा' मानते हैं। अन्य भाषा–भाषी यदि उन्हें 'संत कवि' की संज्ञा देते हैं, तो कुछ आलोचक उन्हें निराश मृत्युवादी समझते हैं।

जीवन

पत्नी पुष्पा के निधन को दस बरस बीत चुके थे। दोनों लड़के सपरिवार दूर शहरों में ऐसे सेट हुए कि उन्होंने फिर बाप की कभी सुध नहीं ली। बेटी का भी अपना घर बस गया था। अब अकेला रह गया था बेचारा उम्रदराज हरिराम। गरीबी ने उसे तंग कर रखा था। अपनी बीमारी से भी बहुत परेशान था वह। जीवन उसे बड़ा दुखदायी लगने लगा था। उदास मन ने आज हरिराम को आत्महत्या के कगार पर पहुँचा दिया। वह घर से निकलकर रेल्वे ट्रैक की ओर चल पड़ा। रास्ते में हरिराम को एक शवयात्रा दिखी। करीब गया। लोगों से कुछ बातें सुनने को मिली कि एक मिट्टी का इसका छोटा सा घर था। उसे नगरपालिका की टीम ने ध्वस्त कर दिया। भरी जवानी में बीवी चल बसी। चार–चार बच्चों की परवरिश में उमर ढल गयी। बदनसीबी तो देखो इसकी। कमाने–खाने लायक दो बेटे माओवादियों की भेंट चढ़ गये। ससुराल गयी बेटी डिलवरी में नहीं रही। ये सबसे छोटा बेटा था जिसे कोरोना ने निगल लिया। अब क्या करे ; कोई काँधा तक देने वाला नहीं। बेचारा खुद ही बेटे के शव को ठेले में ले जा रहा है।

ठेला पेलते रूपसिंग को देख हरिराम को जीवन का अभिप्राय समझ आ चुका था कि जीवन जीने का नाम है।

टीकेश्वर सिन्हा " गब्दीवाला"
घोटिया–बालोद (छत्तीसगढ़)

मेरे अंदर

एक जंगल मेरे अंदर
जहाँ न पंक्षियों का कलरव
शांत नहीं, पर नीरव,
बारूद के धुएँ ने
निगल ली हरितिमा
पुत्र खोया सा बिलखता हुआ
एक पिता की तरह जंगल।
एक नदी मेरे अंदर
जिनके तटों को जकड़ लिया
अपने हाथों से आदम
पनीली देह पुनीत आत्मा
हुई आज बेदम,
धूप/सर्दी/बारिश में
लेटी हुई है नदी अनमनी।
एक पर्वत मेरे अंदर
टूटा हुआ सा है
व्योम चूमता जिसका शिखर,
एक अजीब सी रिक्तता
वन्य पशुओं के कंदराओं में,
पर्यटन–स्थल की संज्ञा ले प्रदूषित
दिखता पर्वत शोकसंतप्त।

टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"
घोटिया–बालोद(छत्तीसगढ़)



नई दिल्ली। कर्नाटक में जैन मुनि की हत्या के विरोध में जैन समुदाय के सदस्यों ने गत दिनों जंतर मंतर पर विरोध प्रदर्शन किया तथा प्रकरण की सीबीआई से जांच की मांग की। विदित है कि जैन मुनि आचार्यश्री कामकुमार जी महीने के शुरुआत में बेलगावी जिले में हत्या कर दी चीन का क्षत–विक्षत शव जिले के चिकोड़ी तालुक स्थित एक गड्ढे में पाया गया इस विषय में 2 लोगों को गिरफ्तार भी किया गया है। ज्ञानवर्धक सूत्र बताते हैं कि यह प्रकरण पैसों के लेनदेन से जुड़ा हुआ है।

है इंसान इस तबाही में एक दूसरे के काम आ,

डुब रहे घर चारों तरफ बढ़ी जा रही तबाही है,
बादल क्या इतने बरसे बाढ़ देश में आई है,
पशु पक्षी सब अपने बसेरे छोड़ रहे,
मानुष की जान अब आफ़त में आई है,
बच्चे बुढ़े बिलख रहे स्थिति जहां खराब है,
फसलें हो गई नष्ट है सारी किसान के बुरे हालात हैं,
नुकसान हर और हो रहा नदी नाले उफान पर,
प्रकृति की क्या त्रासदी आदमी की बन पड़ी है जान पर,
माँ बहने जब घर छोड़ रही जान बचाने के लिए,
क्लेजा बाहर आ रहा घर से दूर जाने के लिए,
स्कूल बंद हो रहे किताबों के पन्ने छुटे हैं,
बचपन भी परेशान है मानो रब उनसे रूठे हैं,
आ रही पहाड़ों से खबरें बुरी हर रोज यहाँ,
दिल दहल जाता है मंज़र को देखकर वहाँ,
है इंसान इस तबाही में एक दूसरे के काम आ,
गिले शिकवे भूला कर एक दूसरे को गले लगा,
सरकारों से भी मेरी अर्जी है
मदद के हाथ हर ओर बढ़ाओ तुम,
नुकसान की भरपाई हो
ज्यादा से ज्यादा जान बचाओ तुम,



रामेश्वर 'देव'
करनाल हरियाणा

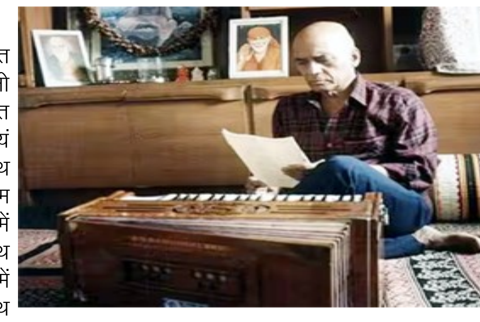
देश ने उन्हें बहुत कुछ दिया और अपने देश को लौट आना चाहते हैं: खैय्याम

दिखाई दिए बेखुद की याद, ए दिले नादान आरजू क्या है जुस्तजू क्या है, आंखों में हमने आपके सपने सजाए हैं, इन आंखों की मस्ती के दीवाने हजारों, कभी–कभी मेरे दिल में ख्याल आता है जैसे गानों को सुनने के बाद सीधा सा सवाल मस्तिष्क में यह उठता है कि एक सफल संगीतकार की सफलता क्या होती है यही ना जब आवाम उसकी धुन को सुनें तो अपने रश्क, गम को भुलकर अनोखे संगीत में डूब जाए। खैयाम के संगीत को अगर एक शब्द कहना हो तो वह है सुकून। उनके संगीत नहीं है कि आपका कोई भी संगीत सुन रहे हो या गुनगुना रहे हो अपने आप आंखें बंद कर लेने का मन करता है। खैयाम की रचना. ओं के बारे में कहा जाता है कि वे गायक व श्रोता दोनों को ही एक अलग स्तर पर लेकर जाते हैं। मो. हम्मद जहूर खैय्याम ने अपने शानदार संगीत की बदौलत चार दशक के कैरियर में पद्मभूषण सम्मान व अन्य अनेक सम्मान जीते। बंटवारे से पहले पंजाब में सआदत हुसैन के बकौल जन्में खैय्याम को बचपन से ही फिल्मों और संगीत से लगाव था। खैय्याम का पूरा नाम मोहम्मद जहूर खैय्याम हाशमी है । 18 फरवरी 1927 को उनका जन्म पंजाब के जालंधर जिले में नवाब शहर में हुआ। पूरा परिवार शिक्षित–दीक्षित था। घर में कविता और संगीत का माहौल था। इसीलिए इनके संगीत सीखने पर किसी ने ऐतराज नहीं किया। संगीत की शुरुआती तालीम खैय्याम ने उस दौर के जानेमाने संगीतकार पंडित हुस्न लाल भगतराम से हासिल की। खैय्याम ने अपने सपने को पूरा करने के लिए 18 की उम्र में ही पाकिस्तानी निर्देशक बाबा चिश्ती के साथ लाहौर में काम शुरू किया, लेकिन घरेलू दबावों के कारण उन्हें दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान आर्मी में सेवा देनी पडीं। हालांकि तीन सल के बाद खैय्याम ने आर्मी की नौकरी छोड़ दिया और फिल्मों में काम करने के लिए 1947 में मुम्बई की ओर अपने कदम उठाए। लगभग पांच वर्षों तक खैय्याम ने शर्मा जी के नाम से काम किया। तभी उन्हें पंजाबी फिल्म "हीर–राँझा" में काम करने का मौका मिला पर 1958 में फिल्म "फिर सुबह होगी" से खैय्याम को पहचान मिली जिसका श्रेय उन्होंने साहिर लुधियानवी को दिया क्योंकि साहिर ने ही राज कपूर को संगीत के लिए खैय्याम के नाम को सुझाया था। खैय्याम उस दौर को याद करके कहते हैं कि मैंने इसलिए हाँ की क्योंकि मुझे मालूम था कि राज कपूर को संगीत का अच्छा इल्म है और वह शायरी भी समझते हैं । उन्होंने पांच धुनों को हर एंगल से तैयार किया। राज कपूर साहब को खुश करने के लिए काफी था। संगीत में अपने योगदान के लिए खैय्याम को 2010 में लाइफ टाइम एचीवमेंट पुरस्कार प्रदान किया गया तथा वर्ष 2011 में उन्हें पद्मभूषण सम्मान भी मिला।

आपको जानकर यह ताज्जुब होगा कि खैय्याम ने अपनी सारी संपत्ति दान कर दी। लगभग 12 करोड की इस संपत्ति से वह और उनकी पत्नी जगजीत कौर ने फिल्मी जगत के जरूरतमंद और उभरते कलाकारों संगीतकारों के लिए एक ट्रस्ट बनाया गया है इसका नाम है– खैय्याम प्रदीप जगजीत चैरिटेबल ट्रस्ट। इसके मुख्य ट्रस्टी गजल गायक तलत अजीज और उनकी पत्नी बीना हैं।

खैय्याम जिन्होंने फिल्म जगत के लिए कुछ जबरदस्त रोमांटिक गीतों को अपने संगीत से सजाया, अपनी कामयाबी और हुनरमंदी का श्रेय अपनी पत्नी जगजीत कौर को देते हैं। खैय्याम की पत्नी जगजीत कौर स्वयं भी एक अच्छी गायिका हैं। उन्होंने खैय्याम के साथ कुछ फिल्मों (बाजर, शगुन और उमराव जान) में काम किया है। खैय्याम ने 60 के दशक में अनेक फिल्मों में हिट संगीत दिया है जैसे– शोला और शबनम, फुटपाथ और आखिरी खत इत्यादि। 70 के दशक में उनकी यादगार कंपोजीशन आई यश चोपडा के साथ जिनकी शुरूआत 1976 में फिल्म "कभी–कभी" से हुई। इस फिल्म में खैय्याम ने अपनी काबिलियत सिद्ध कर दिया। 80 के दशक में खैय्याम ने सबसे यादगार कंपोजीशन तैयार किया यादगार फिल्म का नाम है "थोड़ी सी बेवफाई"। लेकिन खैय्याम का सबसे मशहूर संगीत मुजफ्फर अली की फिल्म "उमराव जान" में आया। इस साउंडट्रेक के लिए खैय्याम को 1981में राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया। इसी फिल्म के लिए पुनः 1982 में फिल्म फेयर का अवार्ड भी मिला।

यह सिलसिला फिल्म बाजार के साथ आगे बढ़ गया। फिल्मों के अलावा खैय्याम ने मीना कुमारी की उर्दू शायरी "आई रिसाइट" के लिए भी संगीत दिया। 80 के दशक में डिस्को और सिन्थेसाइजो के आने के साथ को लेकर खैय्याम की शास्त्रीयता के चाहनेवालों की फेरहिस्त छोटी पड़ने लगी।



खय्याम के अनुसार पाकीजा की जबरदस्त कामयाबी के बाद उमराव जान का संगीत बनाते समय उन्हें डर लग रहा था। क्योंकि पाकीजा उमराव जान की कहानी की पृष्ठभूमि एक जैसी थी। दोनों ही फिल्मों की विषय वस्तु एक ही थी। पाकीजा कमाल अमरोही साहब ने बनाई थी जिसमें अशोक कुमार, मीना कुमारी और राज कुमार थे। इसका संगीत गुलाम मोहम्मद ने दिया था और यह एक जबरदस्त सुपरहिट फिल्म थी। ऐसे में उमराव जान फिल्म का संगीत बनाते समय मैं काफी डरा हुआ था। हम लोग पाकीजा में काफी कुछ देख–सुन चुके थे। ऐसे में उमराव जान के संगीत को खास बनाने के लिए मैंने इतिहास की पुस्तकों का अध्ययन करना शुरु किया। आखिरकार, खैय्याम की मेहनत रंग लाई। 1982 में रिलीज हुई मुजफ्फर अली की फिल्म उमराव जान ने कामयाबी के झंडे गाड़ दिए। इस फिल्म के गीत "इन आंखों की मस्ती के दीवाने हजारों हैं" और "दिल चीज क्या है आप मेरी जान लीजिए" लोगों के सर पर चढ़कर बोलते हैं।

संगीतकार खय्याम में बीबीसी को दिए गए साक्षात्कार में कहा था कि वह किस तरह से छुप छुप कर फिल्म देखा करते थे जिसकी वजह से उनके घर वालों ने उन्हें घर से निकाल दिया था। खैय्याम अपने फिल्मी सफर की शुरुआत हीरो के रूप में करना चाहते थे लेकिन धीरे–धीरे उनकी दिलचस्पी संगीत में बढ़ती गई और वह संगीत के मुरीद हो गए।

गिरती साख से पाकिस्तान बौखलाया



वैश्विक स्तर पर भारत की दिनों–दिन बढ़ती प्रतिष्ठा और अपनी गिरती साख से पाकिस्तान बौखला गया है। आतंकवाद भी अन्तिम चरण में है, क्योंकि लम्बी लड़ाईके बाद भी आतंकी अबतक अपने किसी भी मकसद को हासिल नहीं कर सके, जिससे वे हताश और निराश हैं। केन्द्र के कड़े रुख, साथ ही सुरक्षाबलों की चुस्ती और त्वरित काररवाई से आतंकी खुद दहशत में हैं। जम्मू–कश्मीर में घुसपैठियों के लगातार मारे जाने और स्थानीय लोगों की मदद में भारी कमी से उनकी आतंक की दुकान बन्द होने के कगार पर पहुंच गयी जिससे उनकी बेचैनी बढ़ना स्वाभाविक है। भारतके कड़े कदम से हतोत्साहित पाकिस्तान और उसके पोषित आतंकी अपनी रणनीति बदलते हुए अपने ही देश में अल्पसंख्यकों और धार्मिक स्थलों पर हमला कर आतंकका माहौल बनाने में जुटे हैं पाकिस्तान में पिछले 48 घण्टे में हिन्दू मन्दिरों पर हमले की दो घटनाएं इसी रणनीति का हिस्सा है। पाकिस्तान के दक्षिण सिंध प्रान्त में रविवार को एक मन्दिर पर राकेट लांचर से हमला किया गया। इस हमलेमें आठ से नौ हमलावर शामिल थे, जिन्होंने मन्दिर और आसपास के हिन्दुओं के घरों पर अन्धाधुन्ध गोलीबारी भी की। इसके पहले करांची में शुक्रवार रात 150 साल पुराना मारी माता मन्दिर को बुलडोजर से ढहा दिया गया था।

रविवार को मन्दिरपर हुए राकेट लांचर हमले को पाकिस्तान ने डकैतों का हमला बताया जो हास्यास्पद है। ऐसा पहली बार सुना गया जब डकैतों ने कहीं राकेट लांचर से हमला किया हो। बड़ा प्रश्न यह है कि डकैतों के पास राकेट लांचर आया कहां से। इनका काम लूट और हत्या तक सीमित रहता है। डकैत मन्दिर में लूटपाट, हत्या कर सकते हैं, लेकिन उसे ध्वस्त नहीं कर सकते, क्योंकि इससे उनका कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा। यह शुद्ध रूप से आतंकी हमला है जिसे डकैती के रूप में प्रचार किया जा रहा है। यह हिन्दुओं की आस्था पर हमला है जो मानसिक विकृति को पराकाष्ठा है। इसकी वैश्विक स्तर पर निन्दा की जानी चाहिए। पाकिस्तान इस समय बद से बदतर हालात में पहुंच गया है। आर्थिक रूप से जर्जर देश में खाद्यान्न की कमी और बेकाबू महंगी से भुखमरी की स्थिति पैदा हो गयी है जिससे जनाक्रोश बढ़ता जा रहा है। वहां की जनता भारत के समर्थन में प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्य की प्रशंसा कर रही है और अपनी सरकार की विफलता को कोस रही है जो सरकार, सेना और खुफिया एजेंसी आईएसआई के लिए असह्य है। यही कारण है कि वहां गृहयुद्ध की स्थिति बनती जा रही है।

पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में लोग खुलकर भारतके समर्थन में सड़कपर उतर गये हैं जिससे पाकिस्तान पूरी तरह असहज हो गया है। हालांकि इसके लिए वह स्वयं जिम्मेदार है। अब भी समय है, उसे अपनी विद्वेष की मानसिकता बदलनी होगी और आतंक का रास्ता छोड़कर मानवीय संवेदना को समझना होगा तभी स्थितिको नियंत्रित किया जा सकता है।

'वैवाहिक कलेश' की कहानी 'बवाल', मैरिज से मन खट्टा करती फिल्म

वरुण धवन और जान्हवी कपूर की फिल्म बवाल अमेजन प्राइम वीडियो पर रिलीज हो चुकी है। अगर आप फिल्म देखने के बारे में सोच रहे हैं जो हम आपको फिल्म के बारे में कुछ बता रहे हैं क्योंकि हम फिल्म देख चुके हैं। फिल्म को लेकर यह मेरे विचार हैं। प्रेम और युद्ध की कहानियाँ हमेशा से ही लोगों को पसंद आई हैं। हमने कई फिल्मों को इस तर्ज पर सुपरहिट होते हुए देखा हैं। जंग के बीच संघर्षों में पनपने वाली लव स्टोरी हर किसी को प्रभावित करती है खासकर सिल्वर स्क्रीन पर।

फिल्म बवाल के कथावाचक हमें लखनऊ की सड़कों की सैर कराता है। लखनऊ वो शहर जहां बढ़िया और सस्ते स्ट्रीट फूड मिलते है। यहीं पह अज्जू भैया भी रहते है जो अपनी बुलेट पर बैठकर रोजाना काम पर जाते हैं और एक दिन रात के समय बार मैं बैठ कर अपनी नाखुश शादी के बारे में बात करते हैं। फिल्म की कहानी द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि पर केंद्रित है। बस यहीं फिल्म निर्देशक नितेश तिवारी मात खाते नजर आये हैं। जब फिल्म जगं के बीच प्यार पर बनायी जाती है तब दोनों को स्क्रीन पर बैलेंस करके चलता पड़ता है लेकिन फिल्म में जंग और संघर्ष को जगह न के बराबर दी गयी है।

फिल्म की कहानी

फिल्म की शुरुआत अजय दीक्षित उर्फ अज्जू भैया से होती है, जिसका किरदार वरुण धवन ने निभाया है, जो एक छवि के प्रति सचेत है और जिसने झूठ के पहाड़ के माध्यम से शहर के लोगों के बीच सफलतापूर्वक एक विशिष्ट छवि बनाई है। अज्जू भैया फिल्म में हिस्ट्री बनें हैं। साहसी इतिहास शिक्षक के पास हर किसी के लिए श्ज्ञानश है, लेकिन अपने लिए कोई नहीं। नकली छवि के साथ, वह स्कूली बच्चों और प्रिंसिपल को लुभाता है जो उसकी प्रशंसा करना बंद नहीं कर सकते। लेकिन, दिन के अंत में, उसे अपने माता–पिता और पत्नी निशा (जान्हवी कपूर द्वारा अभिनीत) के पास घर लौटना पड़ता है, जो उसके झूठ और उससे होने वाले खतरे के बारे में जानते हैं।





इसके बाद कहानी निशा और अजय की असफल प्रेम कहानी को उजागर करती है। एक टॉपर, पढ़ा–लिखा, सभ्य और न जाने क्या–क्या! निशा उन गुणों से भरपूर है जो अज्जू को अपनी पत्नी से चाहिए। लेकिन उसके लिए नहीं, समाज के लिए।

निशा बचपन से ही मिर्गी की बीमारी से पीड़ित है और उसने अज्जू को शादी के बाद यह सब बताया था। हालाँकि उनकी हालत नियंत्रण में है और पिछले 10 वर्षों से उन्हें दौरे नहीं पड़े हैं। फिर शुरू होता है शरमाना, वह चरण जहां प्यार में पड़ने पर तितलियां उड़ने लगती हैं। अजय और निशा एक साथ यात्रा पर निकलने के लिए तैयार हो जाते हैं और वे शादी के बंधन में बंध जाते हैं। शादी के दिन, निशा को दौरा पड़ता है जिससे अजय टूट जाता है और वह उससे नफरत करने लगता है।

अजय ने बुरे मूड में एक छात्र को थप्पड़ मार दिया जो एक विधायक का बेटा निकला। अज्जू के लिए चीजें तब उलट जाती हैं जब विधायक स्कूल प्राधिकरण पर उसके खिलाफ एक समिति बनाने और मामले की जांच करने के लिए दबाव डालता है। अज्जू के दिमाग में एक विचार आता है और वह अपने जीवन में आने वाले श्बवालश के लिए श्महाउलश बनाने का फैसला करता है। वह निशा के साथ यूरोप यात्रा की योजना बनाता है और युद्ध स्थलों के छात्रों को विश्व युद्ध 2 अध्याय पढ़ाने की घोषणा करता है। अपने माता–पिता और स्कूल अधिकारियों को बेवकूफ बनाकर, अज्जू अपनी पत्नी के साथ पेरिस पहुंच जाता है। चीजें वैसी नहीं होती जैसी उसने योजना बनाई थी और उसे एहसास होता है कि निशा में उससे ज्यादा समझ है। अज्जू के साथ अपने रिश्ते को सुधारने की आशा के साथ, निशा उसके साथ शहर का भ्रमण करती है। वह एक चोर से लड़ती है, अंग्रेजी में बातचीत करती है, और अज्जू के लिए खाना बनाती है, जिससे एक ऐसा दृश्य बनता है जो आपको ये जवानी है दीवानी के बन्नी और नैना की याद दिलाएगा। पेरिस से नॉर्मंडी तक बर्लिन से एम्स्टर्डम से ऑशविट्ज तक, निशा और अज्जू का जंग लगा हुई प्रेम जीवन द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि में शुरू होता है।

प्रत्येक शहर के साथ, युगल अपने अवरोधों से लड़ते हैं और कहानी के प्रवाह के साथ उनका रिश्ता बदल जाता है। युद्ध की कहानियाँ अज्जू के सिर पर आत्मबोध की तरह टकराती हैं। हालाँकि, छवि के प्रति जागरूक अज्जू को यह तब नुकसान होता है जब निशा और उसका नशे में नाचते हुए एक वीडियो लखनऊ में वायरल हो जाता है। अब बारी आती है निशा की! एक विवाद के बाद, उसने अज्जू को तलाक देने का फैसला किया।

नितेश तिवारी द्वारा निर्देशित, जिन्होंने पहले दंगल और छिछोरे जैसी फिल्मों के लिए सराहना बटोरी थी लेकिन वह बवाल के साथ कुछ खास कमाल नहीं दिखा पाये है। फिल्म असंख्य संदेश देने की कोशिश करती है। अवरोधों से लड़ने से लेकर, पहचान पाने की मध्यम वर्ग की भूख तक, मिर्गी के बारे में जागरूकता पैदा करने तक, द्वितीय विश्व युद्ध के शहीदों को श्रद्धांजलि देने तक, बवाल पश्चिमी यूरोप में कहीं खो जाती है। फिल्म के अंत तक आपको परफॉर्मेंस की भी परवाह नहीं रहेगी।

अर्कवंशी मेधावी छात्र एवम छात्राओं का सम्मान समारोह'



लखनऊ। संघ भवन हजरतगंज लखनऊ में मेधावी छात्र एवम छात्राओं को उनको शिक्षा के क्षेत्र में नए नए कीर्तिमान स्थापित करने के लिए अनेक एक्सपर्ट फैकल्टी द्वारा उन्हें कामयाबी के सूत्र बताए गए ।

कार्यक्रम का शुभारंभ कार्यक्रम की मुख्य अतिथि संडीला विधायक मा. अलका सिंह अर्कवंशी एवम अर्कवंशी क्षत्रिय महासभा के अध्यक्ष इंजीनियर आर. ए. सिंह अर्कवंशी जी श्री अनूप सिंह अर्कवंशी विमल सिंह अर्कवंशी रमेश सिंह अर्कवंशी इंजीनियर राधेश्याम सिंह जी के द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके व सिंगर आशीष अर्कवंशी,तनुप्रिया अर्कवंशी जी के द्वारा गणेश वन्दना, सरस्वती वंदना प्रस्तुति के साथ किया गया।

छात्रों को संबोधित करते हुए UPSC Teacher सतीश कुमार अर्कवंशी जी एवम अनूप सिंह अर्कवंशी जी ने छात्रों को कामयाबी के अनेक सूत्र बताए। कार्यक्रम में आए दूर दराज से मेधावी छात्र, एवम उनके अभिभावक, जो जनपद हरदोई, सीतापुर, कानपुर ,लखीमपुर, पीलीभीत, से पधारे ।उन्हें स्मृति चिन्ह, प्रमाण पत्र, व अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। इसी क्रम अनेक वक्ताओं जैसे अध्यापक देवेंद्र सिंह अर्कवंशी, सुरेंद्र सिंह अर्कवंशी, अशोक सिंह अर्कवंशी, विनोद कुमार अज्ञानी जी ने मेधावी छात्रों को सफलता के टिप्स बताए। कार्यक्रम का संचालन प्रखर वक्ता/ कवि' पंकज सिंह



"दिनकर" ने अपनी शानदार रचनाओं से भरपूर जोश के साथ किया। कार्यक्रम का समापन एडवोकेट आनन्द सिंह अर्कवंशी ने धन्यवाद प्रस्ताव व राष्ट्रगान के साथ किया।।

प्रिय पाठकों,

इस अंक में प्रकाशित सभी अग्रलेख, कथा–लघु कथा, कविता, व्यंग्य, विचार विमर्श लेखकों एवं विचारकों की अपनी कल्पना प्रसूति हैं। त्रुटियां मानवीय स्वभाव का अंग हैं जिनकी ओर ध्यान आकृष्ट करना एक जागरूक पाठक की विशेषता होती है।

अतः आप सभी सुधी विज्ञजनों, से ऐसी अपेक्षा की जाती है कि आप अपने पत्रों के माध्यम से इस अंक में प्रकाशित त्रुटियों की ओर ध्यान आकृष्ट भी समय–समय पर कराते रहें ताकि उन त्रुटियों की पुनरावृत्ति से बचा जा सके।

विवाद की स्थिति में न्यायालय, गोरखपुर का निर्णय अंतिम व मान्य होगा।

—व्यवस्थापक

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक पंकजधर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस, निकट रीड्स साहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45 बादशाहबाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित। सम्पादक–पंकज धर द्विवेदी सम्पर्क सूत्र– e-mail- ghoonghatkibagawat37@gmail.com